मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद

संकलन : उमेश मण्डल

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN :978-93-80538-34-1
दाम: 100/-

पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

Mithilak Samskar Geet, Vidh-vyavahaara Geet aa Geetnaad Compiled by Umesh Mandal: in Maithili Language

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद

अपन बात

अही बेरक बात थिक। विविध-भारती रेडियो स्टेशनसँ गीत सुनै छलौं। अखन धरि मैथिली साहित्यसँ कम्मे-सम्म सिनेह छल। ओना परिवारसँ समाज धरि मैथिलिवेक बीच आठो पहर समए बीतैत अछि। कातिक पूर्णिमाक दिन रहैक, समाजक माए-बहिन लोकनि सामा भसा आंगन दिस सोहर गबैत घुमलीह। एकाएक हमरो कानमे, गीतक ध्वनि हवामे छिड़ैत अबए लागल। रेडियो बन्न कऽ सोहर सुनए लगलहुँ। गीतक स्वर हृदएकें झकझोरए लागल। जेहने माए-बहीन लोकनिक स्वरक मधुर टोंस तेहने एकरुपता। जहिना बहीन, माए-बाप समाजक सखी-सहेलीकें छोड़ि, सासुर जेबा काल अपन क्रन्दनसँ वातावरणकें शोकाकुल बनबैत आ सखी-सहेली सोहरक स्वरसँ विदा करैत, तहिना भऽ गेल। हृदए विदीर्ण हुअए लागल।

अनायास मनमे सवाल उठए लागल-

(क) - की हमर कला-साहित्य, भूमण्डलीकरणसँ आगू बढ़त?

(ख) - आकि जतय अछि ततै, अजगर साँप जकाँ धुसकुरिया मारि, बैसल रहत?

(ग) - आकि हमर कला-साहित्य मटियामेट भऽ जाएत?

अही प्रश्नक बीच उलझल मोनमे, डिबियाक टिमटिमाइत इजोत जकाँ आएल जे अपनो मातृभाषा आ मातृभूमिक सेवा लेल किछु करल जाए! अही जिज्ञासाक संग अपने लोकनिक बीच, एकटा छोट-छीन पोथी 'संस्कार गीत' राखि रहल छी। आशा अछि जे अधलापर धियान नै दऽ आगूक सेवा लेल प्रेरित आ प्रोत्साहित जरूर करब।

गीतक संकलन किछु पोथियोक अछि आ अधिकतर माए-बहीनिक कंठक सेहो अछि। जे गीतिकार लोकनिक गीत संकलित अछि, हुनक आभारी छी। आ जे गीत माए-बहीन लोकनिक कंठक अछि, ओ जहिना कहलनि तहिना लिखल गेल अछि तँए शब्दक फेड़-फाड़ आ टूटल सेहो अछि।

गीतक संकलन करैमे अग्रज सुरेश मंडल आ अनुज मिथिलेश मंडलक भरपूर सहयोग रहल।

मैथिलीपुत्र प्रदीप (1936-)ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक; हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे, हमरा किए बिसरै छी यै" आदि गीत मिथिलामे लेजेंड भए गेल अछि। हुनकर किछु गीत एतए साभार देल जा रहल अछि, तहिना किछु आन लेखकक गीत जँ भगवती गीत खण्ड वा आने खण्डमे आबि गेल हुअए, जे लोकप्रियतावश लोकगीत/ संस्कार गीत बनि गेल अछि, तँ तकर वर्णन जँ पाठकगण देथि तँ अगिला संस्करणमे तकर अभिलेखन कएल जाएत।

बेचन ठाकुर जीक सहयोगक जतेक चर्च करी ततेक कम, ऐ मे सँ बहुत रास गीत वएह संकलन कऽ कऽ देने छथि।

विदेह (www.videha.co.in) क "विदेह ऑडियो"मे https://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/ लिंकपर ४६ टा ऑडियो फाइल अछि। ओइमेसँ सेहो किछु फाइल एतए श्री गजेन्द्र ठाकुरक सहयोगसँ ऑडियोसँ अक्षरमे परिवर्तित कऽ राखल गेल अछि।

अपनेक
उमेश मंडल
20 12 2006

पोथिक बारे

संस्कार कल्पना थिक। हमरा सभहक बीच संस्कारक प्रयोग विभिन्न रूपमे विभिन्न जगहपर होइत अछि। ओना जे रूपमे संस्कारक प्रयोग हमरा सभहक बीच होइत ओ मन्द आ कुशाग्र रूपमे सेहो होइत। मुदा विचारणीय प्रश्न अछि जे मन्द तँ किएक? आ कुशाग्र तँ किएक? एखन हम ऐ प्रश्नक उत्तर नै दऽ शास्त्रीय प्रयोग दिस नजरि दै छी। गर्भजनित वातावरण जन्य कतिपय अपदार्थकेँ दूर करैक हेतु संस्कारक कल्पना कएल गेल अछि। कहल गेल अछि जे ऐसँ शरीर आ मन परिष्कृत होइत अछि। शालीनता आ शिष्टता मनुष्यताक परम सिद्धि थिक आ ओकर प्राप्तिक साधन थिक संस्कार–कर्म। दर्शन शास्त्रक अनुसार भोग्य पदार्थक अनुभूतिक छाप थिक संस्कार–कर्म। मनुष्यक अव्यक्त मनपर अनुभवक जे छाप पड़ैत छैक, समए अएलापर ओ प्रकट भऽ जाइत छैक। यएह छाप थिक वासना आ यएह कहबैत अछि जन्मान्तक संस्कार। धर्मशास्त्री लोकनि संस्कारकेँ शारीरिक, मानसिक आ बौद्धिक गुण-दोषक प्रक्रियाक रूप ग्रहण कएलनि अछि।

आश्वलायन अपन गृहसूत्रमे एगारह तरहक संस्कारक वर्णन केने छथि। जखन याज्ञवल्क्य बारह तरहक। गौतम भिन्न-भिन्न

देवयज्ञकेँ संस्कारमे परिगणित कऽ अड़तालिस संख्या धरि लऽ गेल छथि। भारत सरकारक 1901 ई.क जनगणना प्रतिवेदनक अनुसार ओइ समए हिन्दूमे बारह संस्कार प्रचलित छल। मिथिलामे सोलह तरहक संस्कारक विधान मान्य अछि ई थिक- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास आ अन्त्येष्टि। अखन सिर्फ पाँच तरहक- जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु संस्कारक चलनि अछि। मुदा इहो सभ जातिमे समान नै अछि। जेना उपनयन सिर्फ समाजक अगुआएल जातिक बीच अछि। मूड़नोक रूपरेखा एक रंगक नै अछि। तँए जँ सभकेँ नजरिसँ राखि देखैत छी तँ सिर्फ तीनिये संस्कार जन्म, विवाह आ मृत्यु अछि।

संस्कारक कल्पना आ ओकर चयन वा नामकरणक पाछाँ सामाजिक कारण सेहो प्रमुख रहल। स्पष्ट अछि जे संस्कारक शासन जीवन पद्धतिकेँ खास ढंगसँ नियंत्रित आ आदर्शोन्मुखी बनेबाक लेल देल गेल। शुद्धताक अपेक्षा सुनियोजित जीवन-व्यवस्थाक आवश्यकता अथवा स्थितिक उपस्थिति दिस संकेत करैत अछि। कहैक तात्पर्य जे आर्य-अनार्यक घालमेलसँ उपजल सामाजिक स्थितिमे संस्कारक माध्यमसँ अपन अस्मिताकेँ सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तनक परिणाम थिक संस्कार। मध्यकालमे संस्कारक पालनपर बेसी जोर देल गेल। ओना दोषक निवारण आ गुणक अंगिकार करब अधलाह बात नै थिक। इतिहास साक्षी अछि जे भौतिक परिस्थितिक प्रभावक कारणे समाजमे कखनो वेदिक तँ कखनो वेदक मोल बढ़ैत रहलैक अछि।

आइ जकरा मैथिल संस्कृति कहल जा रहल अछि से की वस्तुत: मिथिलाक संस्कृति थिक? ऐ लेल मिथिलाक इतिहास दिस देखए पड़त। मिथिलाक धरती हिमालयक माटि-बालुसँ बनल अछि। नदी प्रदेशक ऐ भूभागपर किरात आ कोल रहैत छल। आर्यीकरणक अभियानमे जे किछु बहरबैया लोक सभ अइठाम एलाह ओ द्विज बनि कऽ ऐ प्रदेशपर सत्ता स्थापित केलनि। क्षत्रिय राजसत्ता कब्जा केलनि आ ब्राह्मणक हाथमे समाज सत्ता आएल। वैश्यलोकनि अर्थसत्ताक स्वामी बनलाह। मूलवासी अर्थात आदिवासी अन्त्यज बनि गेलाह। बहरबैया लोक कम संख्यामे आएल रहथि तँए कृषि कर्मक लेल वा आनो प्रयोजनसँ प्रतिलोम विवाह जोर पकड़लक। जकर चर्चा मनुस्मृति आ मिथिलाक इतिहासमे विस्तारसँ अछि। द्विजक संख्या कम रहने, अइठामक आदिवासीक देवी-देवता, पावनि-तिहार आ नेम-तेम अपनौलनि। जइसँ ब्राह्मणीकरण भऽ गेल। समाजक सत्ता ब्राह्मणक हाथमे छलनि तँए हुनके जीवन-शैली संस्कृति बनल। बहुसंख्यक मूलवासीपर एकरा नव-संस्कृति आरोपित कएल गेल। ओइयुगमे जकरा प्रचार-प्रसारक माध्यम तँ नै छल, मुदा जे किछु छल ओ हुनके सभहक बीच छलनि। लिखैक-पढ़ैक सुविधा आ सामर्थ्य रहने हुनके (द्विजक) संस्कृति सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृति रमे-रमे बनि गेल। मुदा मूलवासीक जीवन-शैली आ रीति-नीतिक पूर्ण विलयन ने तँ संभव छल आ ने से भेल। आइयो ओ (मूलवासी) दूबि बनि माटि पकड़ने छथि। जकर संस्कृति लोक संस्कृत कहल जाइ छै।

मूड़न आ उपनयन, आब सेहो काम्य संस्कारक कोटिमे अबैत जा रहल अछि। अखनो मिथिलामे ढेरो जाति बसल छथि। किछु जाति छोड़ि बहुसंख्यक जातिक बीच उपनयन प्रथा नहि अछि तँए उपनयनकेँ मिथिलाक संस्कार कोना मानल जाए? हँ, खंडित संस्कार कहल जा सकैत अछि। तहिना मूड़नोक अछि। एक रूपमे मूड़नोक चलनि नै अछि। कियो देवस्थान जा मूड़न करबैत तँ कियो गंगाकात जा। कियो गाममे कबुला-पाती दऽ करबैत तँ कियो बिना गीत-नाद, पूजा-पाठ केने, करैत। कियो समाजमे खीर-टिकड़ी बाँटि करैत तँ कियो भोज-भात कऽ। तँए सभ मिला कऽ देखलापर प्रश्न उठैए जे मुड़नक कोन रूप मानल जाए? तहिना विवाहोक संबंधमे प्रश्न उठैत? कुमार वर आ कुमारि कन्याक संग विवाह प्रचलित अछि। मुदा द्वितीय वर आ कुमारि कन्याक संग विवाह होइत जखन कि बहुसंख्यक जातिमे द्वितिय वर-कन्याक विवाह सेहो होइत। द्वितिय कन्याक संग कुमार वरकेँ सेहो होइत अछि तहिना मृत्यु संस्कारमे सेहो एकरूपता नै अछि। मृत्युकेँ शोक बुझि गीत-नाद नै होइत। मुदा प्रश्न उठैत जे मृत्यु शोकेक संस्कार किएक थिक? हँ, असामयिक मृत्युकेँ शोकक श्रेणीमे राखल जा सकैत। मुदा उचित आयु बीतला परक मृत्युकेँ शोक किएक मानल जाए? जहिना प्रकृतिमे देखैत छी जे अपन पूर्ण आयु पाबि स्वत: नष्ट भऽ जाइत अछि तहिना तँ मनुष्यो थिक। मुदा ढेरो प्रश्न उठलाक उपरान्तो समाज विवाह आ मृत्युकेँ व्यवहारिक संस्कार रूपमे अपनौने छथि। छिटफुट ढंगसँ जे किछु होइत हो मुदा समुद्र रूपी समाज सभ कुछ अपना पेटमे समेट लैत अछि।

व्यक्तिगत जीवनक स्वार्थसँ ऊपर उठि कऽ सार्वजनिक जीवन जीबाक ऐ अभ्यास कालक महत्व आइयो अछि। सन्यास यएह थिक। ब्रह्मचर्य जीवन ज्ञान अर्जनक होइत। गृहस्ताश्रम व्यवहारिक जीनगी होइत, जे उपार्जन कऽ जीवन-जीबाक माध्यम होइत। नव परिवारक सृजन होइत। जइसँ समाज आगूओ बढ़ैत आ समृद्धो होइत। तेसर अवस्था वा अंतिम सन्यास अवस्था तक पहुँचैत-पहुँचैत ज्ञान आ कर्मसँ पूर्ण मनुष्यकेँ अज्ञान आ अबोध मनुष्यक सेवामे लागि जाएब, बेजए नै। वास्तवमे ओ जरूरियो अछि।

संस्कार गीतक अर्थ थिक विभिन्न संस्कारक प्रसंगमे गाओल जाइबला गीत। ई लोक प्रचलित गीत थिक। तँए अइमे लोक–गीतक आत्मा बसैत अछि। लोक गीतक मनोहर फुलबाड़ीमे जँ संस्कार गीतकेँ हटा देल जाए तँ ओ निष्प्राण भऽ जाएत। यएह कारण थिक लोकगीतक, प्राय समस्त विशेषता संस्कार गीतमे उपलब्ध अछि। मृत्यु संस्कारकेँ छोड़ि अन्य सभ संस्कार आनन्दोत्सवक माहौलमे मनाओल जाइत अछि। उमंगमय वातावरणमे नारी कंठसँ निकलैत स्वरलहरी देहमे थिरकन, हृदएमे झंकार आ मस्तिष्कमे चुलबुली उत्पन्न कऽ दैत

अछि। गीत गाएब मिथिलाक सभ नर-नारीक सहजात गुण रहल अछि। जेना देखै छी जे मूड़न, उपनयन, विवाह इत्यादिक समए, सभ नारी समवेत स्वरमे गीत गबैत छथि। जे मिथिलाक धरोहर छी। तहिना पुरुषो पावनि आ धार्मिक कार्यमे सभ मिल गबैत छथि।

संस्कार गीत लोकगीतक अंग थिक। कहल जाइत अछि जे लोकगीतक रचनाकार नै होइ छथि, ओ सार्वजनिक रचना होइए। एकर वास लोक कंठमे अछि। एक कंठसँ दोसर कंठ धरि जाइत-जाइत गीतक स्वरूप बदलि जाइत। ततबे नहि, गीतक भास सेहो बदलैत। एक्के गीत भास बदैल-बदैल कत्ते रुपमे गाओल जाइत। तँए संस्कार गीतमे एकरुपताक अभाव भेटैत अछि। स्वभावगत ऐ स्थितिक दोसर परिणाम थिक भनिताक बेलगाम प्रयोग। गीत गौनिहारि सभ अपने फुरने कोनो गीतमे कोनो रचनाकार नाम भनिताक रुपमे जोड़ि दैत छथि। विद्यापतिक रचना उमापतिक भऽ जाइत तँ कखनो उमापतिक चंदा झाक वा मनबोधक। ततबे नै मैथिली क्षेत्रसँ बाहरोक रचनाकार जना तुलसी, सूर दास, मीरा इत्यादि मिथिलाक माए-बहीनक कंठमे आबि मिथिलेक आ मैथिलियेक गीतकार बनि जाइत छथि। जे उचित आ अनुचित दुनू थिक। उचित ऐ लेल जे हुनकर लोकप्रियता विनयपत्रिका, रामायण, सुरसागर माध्यमसँ एतेक अधिक प्रचलित भऽ गेल अछि जे अपन बनि गेल छथि। जहाँ धरि शब्द टूटैक प्रश्न अछि ओ ज्ञान-अज्ञानक बीचक बात थिक। भाषाक जन्म आम जनक बीच होइत। किछु नव शब्दो जन्म लैत अछि आ शुद्ध शब्द टूटि कऽ नवो बनि जाइत अछि। तँए कोन गीत किनकर लिखल थिकन्हि, संस्कार गीतमे बुझब कठिन भऽ जाइत अछि। स्पष्ट अछि जे संस्कार गीत मैथिल-महिलाक परिष्कृत सांस्कृतिक चेतनाक परिचायक थिक।

मिथिलामे संस्कार गीत अनौपचारिक शिक्षाक माध्यम अछि। मैथिल समाजमे नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल। सिर्फ नारिये नै माटि परक लोकक लेल सेहो छल। कहल जाइत अछि जे वेद वा गीता पढ़लासँ ओ बताह भऽ जाएत। नारीमे विदुषी होइत छलीह। संस्कार गीतक संबंध संस्कृति आ साहित्यसँ तँ अछिये, समाजसँ सेहो अछि। संस्कृति, साहित्य आ समाजक अन्तरावलम्बनकेँ जतेनीक जकाँ संस्कार गीत प्रकट करैत अछि ततेक ऐ प्रकारक आन कोनो धारक नै। संस्कार गीतक संकलन-प्रकाशनसँ मौखिक परम्परा साहित्य समेटल जाइत अछि आ ओ साहित्य अध्ययन-विश्लेषणक आधार प्रस्तुत करैत अछि

मिथिलामे संस्कार गीतक श्रीगणेश होइत अछि गोसाउनिक गीतसँ। ऐसँ मैथिल समाजक धर्मभावनाक ज्ञान होइत अछि। किन्तु प्रश्न अछि जे संस्कारक अवसरपर ई धर्म-भावना मुख्यत: गोसाउनिएक गीतमे किएक प्रकट होइत अछि? स्पष्ट अछि जे अइठाम गोसाउनि गोसाईंसँ बेसी महत्वपूर्ण छथि। भगवानोक गीत मिथिलामे गाओल जाइत अछि मुदा संस्कार कर्मक अवसरपर जे प्रधानता भगवती गीतक अछि से भगवानोक गीतक नहि! आब प्रश्न उठैत जे मिथिलामे देवी-पूजाक प्रमुखता किएक अछि? सभ जनैत छी जे देवी-पूजा तंत्रसाधनासँ सम्बद्ध अछि। किछु इतिहासकारक मत छन्हि जे तंत्रसाधना असंस्कृत जनजातिक समाजसँ आएल अछि। जकरा कालान्तरमे ब्राह्मणवादी लोकनि अपना लेलनि। बहुत दिन धरि तंत्र-साधना अवैदिक कार्य बूझल जाइत छल। रसे-रसे अपनबैत-अपनबैत सनातन धर्ममे जोड़ा गेल। वैदिक धर्मावलम्बी सभ सेहो तंत्र-साधना अपना देवी पूजा दिस आकृष्ट भेलाह। ऐसँ अतिरिक्त मिथिलाक समाजमे शैव-धर्मक प्रमुखता छल अथवा शाक्त धर्मक। जे विवाद विद्वत मंडलीमे बहुत दिन धरि चलल। पाछाँ एतीसँ फरिआएल जे मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक होइत छथि। ई मान्यता पुरानकालक समन्वयवादी धार्मिक जीवनक देन थिक। संस्कार गीतक मध्यकालीन चरित्रकेँ देखार करैत अछि।

गीत संस्कारमे मैथिली गीतक अपन इतिहास अछि। लोचनक 'रागतरंगिणी'मे मैथिल गीतक जे इतिहास लिखने छथि तद्नुसार एकर जन्म तेरहम-चौदहम शताब्दीमे भेल। शिव, सिंह आ विद्यापति समकालिन छलाह। हुनके पितामह सुमति मैथिली गीतक परम्पराक प्रारंभकर्ता छलाह। ऐ प्रकारे मिथिलाक देशी गीत परम्पराक स्थापना भेल। ऐतिहासिक आधारपर सएह मानल जाइत अछि मुदा गीत गेबाक प्रवृत्ति मनुष्यक विकासक संग जुड़ल अछि। जे आधारपर आरो पुरान कहल ज सकैत अछि।

गीत गेबाक ढंग जकरा राग कहल जाइत, मिथिलामे भास कहल जाइत छैक। मिथिला भासक अपन विशिष्टता छैक। संस्कार गीत ऐ भासक भंडार छी। हँ, किछु त्रुटिपूर्ण बात सेहो अछि जेना जाने एक्के गीत (समदाउन) खुशीक समएमे सेहो गबैत छथि आ शोकक समए सेहो जखन कि दुनूक लेल अलग-अलग विषए-वस्तु होइछ। तहिना बेटाक विवाहमे कुमार गीत आ बेटीक लेल कुमारि गीतमे सेहो अंतर होइत अछि। जनमक समए सोहर आ खेलौनामे सेहो अंतर अछि।

अंतमे, संकलनकर्ता नवयुवक छथि, तँए बहुत किछु त्रुटि रहलाक बादो धन्यवादक पात्र छथि, जे अपन मातृभाषाक सेवा लेल डेग बढ़ौलनि अछि।

-जगदीश प्रसाद मंडल

31. 12. 2006

गोसाउनिक गीत–

(1)

सिंह पर एक कमल राजित ताहि ऊपर भगवती।

उदित दिनकर लाल छवि निज रुप सुन्दर छाजती।
दाँत खट-खट जीह लह-लह श्रवण कुण्डल शोभती।
शंख गहि-गहि, चक्र गहि-गहि खर्ग गहि जगतारिणी।
मुक्तिनाथ अनाथ के माँ भक्तजन के पालती।
सिंह पर एक कमल राजित ताहि ऊपर भगवती।
माँ ताहि ऊपर भगवती।

(2)

सभ के सुधि अहाँ छी अम्बा हमरा किए बिसरै छी हे।
हमरा दिस सँ मुह फेरै छी, ई नहि उचित करै छी हे।
छी जगदम्बा जा अवलम्बा तारिणी तरणि बनै छी हे।
छन-छन पल-पल ध्यान धरै छी दरसन बिनु तरसै छी हे।
छी हम पुत्र अहीं केर जननी से तँ अहाँ जनै छी हे।
राति-दिन हम विनय करै छी पापी जनि ठेलै छी हे।
सभ के सुधि अहाँ लै छी अम्बा हमरा किए बिसरै छी हे।

(3)

कोन दिन आहे काली तोहर जनम भेल, कोन दिन भेल छठियार।
शुक्र दिन आहे सेवक हमरो जनम भेल, बुध दिन भेल छठियार।
पहिर ओढ़िय काली गम्भर ठाढ़ि भेली, करब मे काली के सिंगार।
कोन फूल ओढ़न माँ के कोन फूल पहिरन, कोन फूल सोलहो सिंगार।
चम्पा फूल ओढ़न, जूही फूल पहिरन, ओड़हुल फूल सिंगार।
भनहि विद्यापति सुनु माता काली, सेवक रहु रक्षपाल।
कोन दिन आहे काली तोहर जनम भेल, कोन दिन भेल छठियार।

(4)

अब ने बचत पति मोर हे जननी,
अब ने बचत पति मोर।
चारु दिस पथ हेरि बैसल छी,
क्यो ने सुनै दुख मोर। हे जननी.....
एहि अवसर रक्षा करु जननी,
पुत्र कहाएब तोर।- हे जननी.....
अलटि-बिलटि कऽ जँ मरि जाएब,
हँसी होयत जग तोर। - हे जननी.....
अबला जनि शरण दीअ जननी,
नाम जपत हम तोर।- हे जननी....

(5)

हम अबला अज्ञान हे श्यामा,
हम अबला अज्ञान।
धन सम्पति किछु नहि अछि हमरा,
नहि अछि किछुओ ज्ञान।- हम अबला....
नहि अछि बल, नहि अछि बुद्धि,
नहि अछि किछुओ ध्यान।- हम अबला......
कोन विधि भव सागर उतरब,
अहिंक जपत हम नाम।- हम अबला...

(6)

जगदम्ब हे अवलम्ब मेरी, जननी जय जय कालिका।
दश भुजा दश खड्ग राजित, पाश खप्पर विराजित।
मुण्ड लय-लय मगन नाचय, गावय योगिन मालिका।
भाइ भैरव मुण्ड छीनथि जय जय कालिका।

(7)

अहाँ किए भेलहुँ कठोर हे जननी अहाँ किए भेलहुँ कठोर।
हम दुखिया माँ शरण अहाँ के अहाँ किए भेलहुँ कठोर- हे जननी...
अतुल कष्ट सहि जनम देल अछि आब पोछत के नोर-हे जननी ...
ककरा पर हम जनम गमायब के करती आब शोर- हे जननी....
ककरा पर हम रुसि पड़ायब के आब रक्षक मोर- हे जननी अहाँ किए....

(8)

क्यो ने हमर रखवार हे जननी,
क्यो ने हमर रखवार।
चिन्ता विकल विवश मन मेरो,
मन दुख होइए अपार।
हे जननी क्यो....
बिनु अवलम्ब धार मे डुबलहुँ,
सुझत नहि किनार।- हे जननी.....
अहाँ किए देर लगेलहुँ जननी,
हम डुबलहुँ मझधार।- हे जननी....
सृष्टिक मालिक अहीं छी जननी,
करहु सभक प्रतिपाल।- हे जननी....
माता के सब पुत्र बराबरि,
पंडित मूर्ख गमार। - हे जननी....
कतेक विनय कय थाकि गेलहुँ हम,
अब करिअ भव पार। - जननी...

(9)

कहाँ नहैली काली कहाँ लट झाड़लन्हि,
कहाँ कएल सिंगार हे।
गंगा नहैली काली घाट लट झाड़लन्हि,
गह्वर कएल सिंगार हे।
पहिरि ओढ़िया काली गह्वर ठाढ़ भेलि
करय लगली सेवक गोहारि हे।
यश लिय यश लिय काली हे माता,
अहाँ यश फिरु संसार हे।- कहाँ.....

(10)

अयलहुँ शरण तोहार हे जगतारनि माता।
लाले मन्दिरवा के लाले केवरिया,
लाले ध्वजा फहराय हे जगतारनि माता।
लाले चुनरिया के लाले किनरिया,
लाले सिन्दुर कपार हे जगतारनि माता।
राखि लिय मुख लाली हमरो,
हम लेब अँचरा पसारि हे जगतारनि मता।
अयलहुँ शरण तोहार हे जगतारनि माता।

(11)

हे जगदम्बा जय माँ काली प्रथम प्रणाम करै छी हे।
नहि जानि हम सेवा पूजा अटपट गीत गबै छी हे।
सुनलहुँ कतेक अधम के मैया मनवांछित फल दै छी हे।
पुत्र सम जानि चरण सेवक के जन्मक कष्ट हरै छी हे।
विपतिक हाल कहल की हे मैया आशा लागि जपै छी हे।
सोना चानी महल अटारी ई सब किछु ने मँगै छी हे।
मनक मनोरथ मनहि मे राखि मंदिर तक पहुँचै छी हे।
अहाँक चरण के दास कहबी एतबे हम मनबै छी हे।
प्रेमी जन सँ पाबि निराशा नयन नीर बहबै छी हे।
नोर बहा कऽ अहाँ लय मैया मोती माल गुथै छी हे।

******

सोहर–

(1)
गरजहु हे मेघ गरजहु गरजि सुनावहु रे।
ललना रे- ऊसर खेत पटबहु सारि उपजाबहु रे।
जागहु आरे बाबू जागहु जागि जुड़ाबहु रे।
ललना रे- बाबा सिर छत्र धराबहु शत्रु देहु आँकुश रे।
हम नहि जानब ओहि कोखि अइला कोखि रे।
ललना रे- पीतहि वसन सुतायत छौड़ा कहि बजायत रे।
जागहु आरे बाबू जागहु जागि जुड़ाबहु रे।
ललना रे- पीयर वस्त्र सुताबहु बाबू कहि बजायब रे।

(2)
पलंगा सुतल तोहें पिया कि तोहें मोर साहेब रे।
ललना रे- बगिया जँ एक लगबितहुँ फुला हम चखितहुँ रे।
भल नहि बोललहु धनी कि बोलहुँ न जानहु रे।
ललना रे- बेटबा जँ एक तोरा होइत सोहर हम सुनितहुँ रे।
भानस करैत तोहें गोतनी कि तोहें मोर हित बंधु रे।
ललना रे- अपन बालक दिअ पैंच पिया सुनु सोहर रे।
सोन तेल पैंच उधार भेटय आर सभ किछु रे।
ललना रे- कोखिआक जनमल पुत्र सेहो नहि भेटय रे।
मचिया बैसल तोरे सासु कि सासु सँ अरजि करु रे।
ललना रे- कओन-कओन तप केलहुँ पुत्र फल पेलहुँ रे।
गंगहि पैसि नहेलहुँ हरिवंश सुनलहुँ रे।
ललना रे- देवलोक भेला सहाय कि पुत्र फल पयलहुँ रे।
आछैत लगैत बिलम्ब भेल होरिला जनम लेल रे।
ललना रे- लाल के पलंगा सुता देल पिया सुनू सोहर रे।

दशमासी सोहर

(3)
प्रथम मास जब आयल चित्त फरिआयल रे।
जनि गेल सासु हमार चढ़ल मास दोसर रे।
सासु मोर बसु नैहर ननदी बसु सासुर रे।
घर छथि देवर नदान चढ़ल मास तेसर रे।
बाट रे बटोहिया कि तोहि मोर भैया कि हित बंधु रे।
हमरो समाद लेने जाउ चढ़ल मास चारिम रे।
अन्न पानि किछु नहि भावय खटरस भावय रे।
कहब हम कओन उपाय चढ़ल मास पाँचम रे।
रचि-रचि पतिया लिखाओल नैहर पठाओल रे।
बिनु आमा नैहर विरान चढ़ल मास छट्ठम रे।
आगु-आगु आबय डोलिया पाछु भैया आबय रे।
घुरि-घुरि घर भैया जाउ चढ़ल मास सातम रे।
तन भेल सरिसब फूल देह भेल पीयर रे।
अब न बाँचत जीव मोर चढ़ल मास आठम रे।
घर-घर बाजत बधावा कि भेल बड़ आनन्द रे।
अयोध्या मे जनमल राम चढ़ल मास नवम रे।
तुलसीदास सोहर गाओल गाबि सुनाओल रे।
भक्तवत्सल भगवान कि आजु प्रकट रे।

(4)
एक दिन छल बन झंझार आब बन हरियर रे।
बड़ रे सीता दाई तपसी कि गरम सँ रे।

के मोरा गरुअति काटत खिनहरि बूनत रे।
ललना रे मन होय पियरी पहिरतहुँ गोद भरबितहुँ रे।
ललना रे राम दुल्हिन भए बैसतथि कौशल्या चुमबितथि रे।

(5)
प्रथम समय नियराओल शुभ दिन पाओल रे।
ललना रे देवकी दरदे व्याकुल दगरिन आयल रे।
दोसरो वेरन जब आयल कृष्ण जन्म लेल रे।
ललना रे तेसर हरिक प्रवेश कलेश मेटायल रे।
दगरिन आबि जगाओल केओ नहि जागल रे।
ललना रे हरि देखि सभ मन अचरज सभ छित साधल रे।
सूरदास प्रभु लिकर कृष्ण जनम लेल रे।
बाजा बाजय सभ ठाम देव लोक हरखित रे।

(6)
उतरि सावन चढ़ै भादव चहुँ दिस कादव रे।
ललना रे मेघवा झरी लगावय दामिनि दमकय रे।
जनम लेल यदुनन्दन कंस निकन्दन रे।
ललना रे फुजि गेल वज्र केवाड़ पहरु सब सूतल रे।
शंख चक्र युक्त हरि जब देवकी देखल रे।
ललना रे आइ सुदिन दिन भेल कृष्ण अवतार लेल रे।
कोर लेल वसुदेव कि यमुना उछलि बहू रे।
ललना रे हरि देल पैर छुआय नन्द घर पहुँचल रे।
नन्द भवन आनन्द भेल यशुमति जागल रे।
ललना रे सूरदास बलि जाय कि सोहर गाओल रे।

(7)
घर से बहार भेली सुन्दरि, देहरि धय ठाढ़ भेली रे।
ललना रे ओलती धय धनि ठाढ़ि कि, दरदे व्याकुल रे।
कथि ले बाबा बिआहलनि, बलमु घर देलनि रे।
ललना रे रहितहुँ बारि कुमारी, दर्द नहि जनितहुँ रे।
अगाध राति बिराल पहर राति, बबुआ जनम लेल रे।
ललना रे बाजय लागल बधावा, कि गाओल सोहर रे।

(8)
पहिल पत्न सिया ठानल सेहो विधि पुराओल रे।
ललना रे भेटल अयोध्या राज ससुर राजा दशरथ रे।
दोसर पत्न सिया ठानल सेहो विधि पुराओल रे।
ललना रे भेटल कौशल्या सासु लखन सन देओर रे।
तेसर पत्न सिया ठानल सेहो विधि पुराओल रे।
ललना रे माँगल पति श्रीराम सेहो विधि पूरल रे।

(९)
गाँव के पछिम एक कुइयाँ सुन्दरि एक पानि भरु रे।
ललना रे घोड़बा चढ़ल एक कुमर पानि के पियासल रे।
पानि पीबू पानि पीबू कुमर सुरति नहि भुलह रे।
तोरो सँ सुन्दर हमर स्वामी जे तजि विदेश गेल रे।
कोन मास तोहरो विआह भेल कोने गवन भेल रे।
कोने मास जोड़ल सिनेह कि तजि परदेश गेल रे।
फागुन हमरो विआह भेल कि चैत गवन भेल रे।
बैसाख जोड़ल सिनेह कि तेजि विदेश गेल रे।

(10)

जीर सन धनि पातरि फूल सन सुन्दरि रे।
ललना रे सुतल प्रेम पलंग पर दरदे ब्याकुल रे।
सासु जे हुनका अलारनि बहिनि दुलारनि रे।
ललना रे तिल एक दरद अंगेजहु, होरिला जनम लेत रे।
जाहु हे ननदी जाहु, भइया के बजवहु हे।
ललना रे भइया ठाढ़ देहरि बीच कहु बात मनके रे।

खेलौना

(1)
भैया के घर बेटा जनम लेलक बधैया माँगे एलै हो लाल।
सोना खड़ाम चढ़ि भैया एला की की मोर बहीन लेली हो लाल।
सोनाक हम मढ़ुआ लेलौं रुपा केर हम लेलौं काड़ा हो लाल।
रेशमी कपड़ाक अंगा लेलौं जड़ी लागल हम टोपी हो लाल।
पचासक बदला सौ लऽ कए जेती रेशम साड़ी पहिरैथिन हो लाल।
भनस कए कऽ भौजी असली खादी साड़ी पहिरैथिन हो लाल।
सयक बदला पचास लय कए जेती, मूड़ी मे ठांउ लगतनि हो लाल।
कनैत खीजैत घर ननदि जेती हो लाल।

(2)
आइ छठि दिन घर मे सुदिन भेल
  घर मे भेल ललना, दुआरे बाजे बजना।
बाबा लुटबथि हाथी ओ घोड़ा
  बाबी लुटावे गहना, दुआरे बाजे बजना।
काका लुटबे घड़ी ओ औंठी
  काकी लुटावे कंगना, दुआरे बाजे बजना।
पिसा लुटबे मोटर गाड़ी
  पीसी लुटावे यौबना, दुआरे बाजे बजना।

(3)
बाजे बाजे बधावा नन्द के अंगना
  कथक नाचे पमरिया नाचे, छोटकी ननदिया नाचे अंगना।
किये तौं ननदी नाचह आंगन, तोरो भैया रहथि पटना।- बाजे....
भैया हमर पटना रहै छथि, ओतहि सँ आओत मोती के कंगना।
भाई मोरा जीबौ भतीजवा जीबौ, देव पुराओल मन कामना।

(4)
ककरा के अंगना जनमिहरा रे,
मन रंजेके लाल।
ककरा बहिनि आयब रे,
मन रंजेके लाल।
बाबा के अंगना जनमिहरा रे
मन रंजेके लाल।
पलंगा सुतल तोहे पिया हे,
मन रंजेके लाल।
बहिनि मांगय इनाम रे
मन रंजेके लाल।
तेरे सन्दुक मे कंगना रे,- मन रंजे...
कंगना हम नहि लेब रे, मन....
हमहि त लेब नौ लाखा हार,- मन.....
रुसैत जायब ससुरारि रे,- मन......
हम नहि देब नौ लाख के हार,- मन....
कनैत जाउ ससुरारि रे,- मन.....
जँ नहि देब नौ लाख के हार,- मन ....
बबुआ के लऽ जैब ससुरारि रे,- मन....
फेर कऽ बबुआ जनम लेब रे,- मन....
नैना मे नैना मिला लेब रे,- मन....
सुनु बचन अहाँ ननदी रे,- मन....
कोखिया लहरि नहि जाय रे,
  मन रंजेके लाल।

मनियारि मिसरक गीत

कहमा केर जड़िया कहमा सिलौटिया रे।
ललना रे- कओन मुँह भय पीसब, कौशिल्या पीआयब रे।
दछिन के इहो जड़िया, पछिम सिलौटिया रे।
ललना रे- पूब मुँह भय पीसब, कौशिल्या पीयाअब रे।
पहिने जे पीलनि कौशिल्या रानी, सुमित्रा रानी रे।
ललना रे- सिल धोइ पीयल कैकेयी रानी तीनू गरभ सँओ रे।
कौशिल्या के जामत राम, सुमित्रा के लछमन रे।
ललना रे- कैकेयी के भरत, शत्रुघन, तीनू घर सोहर रे।

तेल-करम लगबैक गीत

(1)
कौने बाबा हरबा जोताओल, मेथिया उपजाओल हे।
कौने बाबी पीसल कसाय, जे कि बरुआ ओंगारल हे।
बड़का बाबा हरबा जोताओल, कि सरसो उपजाओल हे।
ऐल्ह बाबी तेल पेरौलीह, बरुआ ओंगारथि हे।

(2)
काँचहि बाँस के मलिया हे,
आकि ताहि मलिया तेल फूलेल हे।
कौने बाबी लगेतीह तेल फूलेल,
आकि कौन बाबी लगेती उबटन हे।
आकि फल्लाँ बाबी लगौती तेल फुलेल,
आकि फल्लाँ बाबी लगौती उबटन हे।

मूड़न

गोसाउनि नोतक गीत-

जँ हम जनितौं काली मैया औती
अगर चानन मंगबितौं हे।
गंगा सँ मैया चिक्कनी मंगबितौं
ऊँच के पीड़िया बनबितौं हे।
नीर गंगाजल सँ पीड़िया निपबितौं
अड़हुल फूल चढ़बितौं हे।
पीअर पीताम्बर माँ के आँचर दीतौं
सोन रूपे घूँघरू लगाय हे।
जोड़ा छागर धूर बन्हबितौं
करिया दीतौं बलिदान हे।
भनहि विद्यापति सुनु देवि काली
सदा रहब सहाय हे।

पितर नोतक गीत-

कौन बाबा आओत गजा हाथी
ओ जे कौने बाबा लिल घोड़ा हे।
कौने बाबी अओती डोलियहि
कि बरुआ आशीष देती हे।
बड़का बाबा आओता गजा हाथी
छोटका बाबा लिल घोड़ा हे।
ऐरब बाबी अओती डोलियहि
कि बरुआ आशीष देती हे।

मूड़न बेरक गीत-

समुआ बैसल तोहे बाबा कि बरुआ अरजि करु हे।
लपटि झापय ललाट करह जगमूड़न हे।
रहु बाबू रहु बाबू बरुआ कि होयत सुदिन दिन हे।
नोतब सकल परिवार करब जगमूड़न हे।
मूड़न करैत बरुआ क बाबा सँ अरजि करु हे।
आनहु पीसि बोलाय कि अउरी पसारल हे।
औती पीसी सोहागिन बैसति चौक चढ़ि हे।
पीअर वस्त्र पहिरती केश परिछति हे।

केश कटबै कालक गीत-

कौने बाबा छुरिया गढ़ाओल सोने मढ़ाओल हे।
कौने अम्मा लेल जन्म केश कि शुभ-शुभ होयत हे।
बड़का बाबा छुरिया गढ़ाओल रतने मढ़ओल हे।
बड़की बाबी लेल जन्मकेश कि शुभ-शुभ होयत हे।
देब हे नौआ पीयर लाल धोतिया सोनक कैंचिया हे।
शुभ कऽ उतारऽ बाबाक केश बबुआ जीक मूड़न हे।

नौआक गीत-

धीरे-धीरे कटिहह नौआ केश, कि बौआ बड़ दुलारु छइ हौ।
बौआक मामी नौआ तोरे देबह, कि बौआ छै बड़ दुलारु हौ।
बौआक मामी थार परोसलखिन, टकुआ तोरे देबह केरा तोरे देबह हौ।
बौआक नाना धोती पठेलखिन, पीअर मे रंगि के तोरे देबह हौ।
धीरे-धीरे कटिहह केश, कि बौआ छै बड़ दुलारु हौ।

नहेबा कालक गीत-

कोने बाबा पोखरि खुनाओल, कि घाट बनाओल हे।
कोने बाबा भरथि जूड़ी पानि, कि बरुआ नहाबथि हे।
अपन बाबा पोखरि खुनाओल, घाट बनाओल हे।
ऐल्ह बाबी भरु जुड़ि पानि, कि बरुआ नहाबथि हे।

चुमाओन गीत-

आजु माइ शोभा श्री रघुवर के
मातु कौशल्या हकार पठाओल
गाइन जनोक नगर के।
कैकेयी आयलि सुमित्रा आयलि
गाइनि सगर नगर के।
दुबि अछत लय देवलोक आयल
चर जेलय रघुवर के।
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दरस के
जीवन सफल दरस के।
आजु माइ शोभा श्री रघुवर के।

भगवतीक विनती-

अयलहुँ सरन तोहर हे जगतारनि माता।- अयलहु.....
लाले मन्दिरिया के लाले केबरिया।
लाले ध्वजा फहराय हे जगतारनि माता।-
लाले चुनरिया के लाले किनरिया,
लाले सिनुर कपार हे जगतारनि माता॥
राखि लिऔ मुखलाली हमरो।
हम लेब अचरा पसारि हे जगतारनि माता॥
अयलहुँ सरन तोहार...

ग्राम देवताक गीत-

बेरि-बेरि बर बरजौं मालिनि बेटिया,
बाट घाट जुनि रोपु फूल हे।
एहि बाटे औता ब्राह्मण दुलरुआ,
घोड़ टाप तोड़ि देत फूल हे।
कानै लगली खीजे लगली मालिनि बेटी,
आंखि स बहै लागलि नोर हे।
के निरमोहिया फूल गाछ तोड़त,
के रे देत वरदान हे।
जुनि कानू जुनि खीजू मालिनि बेटिया,
हमरा स लीअ वरदान हे।
पहिल जे मंगलो ब्रह्मण सिर के सिनुरबा,
तखन कोर भरि पुत्र हे।
जे पुत्र दीह ब्राह्मण हरि नहि लीह,
बाँझी पद छूटत गोर हे।

साँझ-

साँझ दिय यसुमति मइया हे साँझ बीतल जइये।
जैता कन्हैया खिसिआय, हे साँझ बीतल जइये।
कथी केर दीप कथी केर बाती, हे साँझ बीतल जइये।
सोना केर दीप पाट सूत बाती, हे साँझ बीतल जइये।
सरसो तेल जरय सारी राती, हे साँझ बीतल जइये।

जरय लागल दीप चमकि गेल बाती, हे साँझ बीतल जइये ।
खेलय लगले साँझ मइया, हे साँझ बीतल जइये ।

उपनयनक गीत-
(उद्योग गीत)
गोसाउनिक नोतक गीत-

अड़ुल फूल देखि अयली गोसाउनि, दूधहि चरण पखारब हे।
छुट्टा पान गोटा सुपारी, माँ काली नोतल जाथि हे।
बरुआक माय बाप गोचर करै अछि, सुनु माता विनती हमार हे।
सेवक बालक स्तुति नहि जनय, छमा करब सब अपराध हे।

पीतर नोतक गीत-

दुअरहि बाजन बाजय स्वर्ग आवाज गेल हे।
स्वर्ग मे पुछथिन बरुका बाबा कतय बाजन बाजू हे।
अहाँ कुल जनमल फल्लाँ बरुआ ओतहि बाजन बाजू हे।
स्वर्गहि पितर आनन्द भेल कि आब वंश बाढ़ल हे।
स्वर्ग सँ आबि पितर बरुआ के आशीष देल हे।

बाँसकट्टीक गीत-

वृन्दावन बाँस कटायब कि मड़बा बनायब हे।
पहिने बाँस के पूजब तखन छड़ लगायब हे।
आहे ई ठीक काठ सुकाठ एही सँ माड़ब बान्हब हे।
आहि वृन्दावन बाँस कटायब कि मड़बा बनायब हे।

मड़बट्टीक गीत-

जन्म सुफल आइ भेल की आंगन माड़ब भेल हे।
जन्म सुफल ओहि बाबाक जिनका आंगन माड़ब हे।
जन्म सुफल ओहि बाबीक जनिका कुल पुत्र भेल हे।
पीयरहि खड़ छरायब कि लाल झालरि लगायब हे।
ताहि माड़ब बैसत फल्लाँ बरुआ जिनकर जाउ लेत हे।
चहुदिस रहतनि सर सम्बन्धी की माड़ब सोहाओन हे।

मड़बा छारैक गीत-

बाबा हे फल्लाँ बाबा मड़बा छारि मोहि देह।
बरिसत हे नन्हबुनिया मेघ,
भीजत हे मोरा बालक बरुआ,
पीताम्बर ओढ़न को देह।- बाबा हे....
बाबी हे फल्लाँ बाबी आँचर झाँपि मोहि लेह।
बरिसत हे नन्हबुनिया मेघ,
भीजत हे मोरा बालक बरुआ,
आँचर झाँपि मोहि लेह।- बाबा हे....

मड़बा नीपक गीत-

बाबा दान दीअ यौ, मटिया कोड़ैक इनाम दीअ यौ।
बाबा दान दीअ यौ, मड़बा नीपैक इनाम दीअ यौ।
गइया जे देलौ बछिया लगाय,
आर किछु दान बेटी आमा सँ लीअ?
आमा दान दीअ यौ, मड़बा नीतैक इनाम दीअ यौ।
बाली जे देलौ बेटी झुमका लगाय,
आर किछु दान बेटी भैया सँ लीअ।
भैया दान दीअ यौ, मड़बा नीपैक इनाम दीअ यौ।

कंगना जे देल खीलन लगाय,
आर किछु दान बहिन काकी सँ लीअ।

बलिप्रदान कालक भगवती गीत-

बदन भयावन कान बीच कुण्डल विकट दशन घन पाँती।
फूजल केश वेश तुअ के कह जनि नव जलधर काँती।
काल्ल माथ हाथ अति शोभित तीक्ष्ण खड्गकर लाई।
भय निर्भय बर दहिन हाथ लय रहिअ दिगम्बरि माई।
पीन पयोधर ऊपर राजित लिधुर स्रावित मुण्डहारा।
कटि किंकिणि शव कर मण्डित सिक बह शोणित धारा।
बसिअ मसान ध्यान सब ऊपर योगिन गण रहु साथे।
नरपति पति राखिअ जा ईश्वरि करु महिनाथ सनाथे।

बेरा विवाह
कुमरमक गीत-

(1)

हम ते पोखरि खुनबै तेइ के घाट मढ़बै।
छिनारो आयल करिहें ओहि रे पोखरिया मे।
रसिया बात बाजू सम्हारि, छोड़ू हमरा से आरि।
हम त झुलफी धय घिसिआयब पोखरिया मे।
हम त कोठवा उठैब तेइ मे खिड़की लगैब।
छिनरो आयल करिहें ओहि रे कोठरिया मे।
रसिया बात बाजू सम्हारि छोड़ू हमरा से आरि,
हम त झुलफी धय घिसिआयब कोठरिया मे।
हम त पलंगा लगैब तेइ मे तोसक ओछायब।
छिनरो आयल करिहें ओहि रे पलंगिया मे।
रसिया बात बाजू सम्हारि छोड़ू हमरा से आरि।
हम त झुलफी धय घिसिआयब पलंगिया मे।

(2)

रिमझिम रिमझिम बुन्दे बरसि गेल, अंगना मे पड़ल कजरिया।
थरिया धोबै गेलि फल्लाँ छिनरिया, खसली टांग अलगइया।
घोड़वा चढ़ल एलखिन फल्लाँ रसिया उठ गे छिनो हरजैया।
हम कोना उठबौ रसिया, तोहर बचनिया उरवा मे पड़लैमचकिया।
उरवा मचकिया के की की दवैया, सोठि पीपरि मरचइया।
सोठि पीपरि के बड़ रे जहरिया, अतर गुलाब ठंढैया।

जुड़िका बन्धनक गीत-

कोने बाबा केरा गाछ रोपल, केरा कोसाय गेल हे।
कोने बाबीक बरुआ उमत भेल राति शहर बसु हे।
फल्लाँ बाबा केरा गाछ रोपल केरा कोसाय गेल हे।
फल्लाँ बाबी बरुआ उमत भेल राति शहर बसु हे।
मड़बहि घीव ढरकि गेल स्वर्ग इजोत भेल हे।
स्वर्गक पितर आनन्द भेल आब कुल रहत हे।

आम-महु विआहक लेल जाबा कालक गीत-

जाइत देखल पथ नागरि सजनी गे,आगरि सुबुधि सयानि।
कनकलता सन सुन्दरि सजनी गे, विधि निरमाओल आनि।
चलैत हसित गमन सन सजनी गे, देखैत राजकुमारि।
जनिकर ऐहन सोहागिनि सजनी गे, पाओल पदारथ चारि।
निल वसन तन घेरल सजनी गे, सिर लेल चिकुर सम्हारि।
ओहि भ्रमर रस पीबह सजनी गे, बैसल पंख पसारि।

आम-महु विआहक गीत

(1)

आम बीछै गेली छिनरो, आँठी बिछि लेली हे।
पचास बेर मना देलियह, तैयो ने तो मानली हे।
आम महु बिआहे छलै तही मे भुलेलिऐ हे।

हजार बेर मना देलियह, तैयो ने तो मानली हे।

(2)

अमुआ मजरि गेल जमुआ मजरि गेल चम्पाकली
ताहि तर छिनरो ठाढ़ि नयना सँ नीरे ढरी।
घोड़वा चढ़ल एलखिन फल्लाँ रसिया
किए अकेली ठाढ़, नयना सँ नीरे ढरी।
सासु मोर बुढ़िया हे ननदी ससुररिया
मोर पिया गेलै परदेश, नयना सँ नीरे ढरी।
छाड़ि दीअ आगे छिनरो घरवा दुअरवा
        सुख सम्पति सगरी।
छोड़ि देह बिअहुआ के आश चल हमरो नगरी
अगिया लगेबै रसिया के घरवा दुअरवा, सुख सम्पति सगरी।
बज्र खसेबै तोरे माथ मोर पिया आते रही।

उपनयन कालक गीत-

(1)
चैतहि बरुआ विजय भेल बैशाख पाहुन भेल हे।
घर पछुआर केवटा बसु पार उतारि देहु हे।
जौं हम पार उतारब जायब कओन देश हे।
जायब हम जाहि देश जहाँ अपन बाबी हे।
बाबी के चरण पखारब लाल जनउआ देती हे।

(2)
काशी मे जाय बरुआ ठाढ़ भेल जनऊ पुकारय हे।
आहे के थिका काशी के वासी जनऊ मोहि चाहिय हे।
सुतल छला बाबा कवखनाथ सेहो उठि बैसला हे।
आहे हम थिकौं काशी के वासी जनऊआ पहिरायब हे।
झारिखंड जाय बरुआ ठाढ़ भेल जनऊआ माँगय हे।
आहे के थिका झारिखंड वासी जनऊ मोहि चाहिय हे।
हम थिकौं झारिखण्ड वासी जनऊआ पहिरायब हे।
आंगन आबि ठाढ़ि भेल भिखि मांगय हे।
हम थिकौं अहाँ के बाबी झोरी भरिय देव हे।

भीख कालक गीत-

मिथिलाक रुसल बरुआ काशी कथि लेल जाय।
आगे दाय कियो नहि हित बन्धु जे बरुआ लेल बिलमाय।
आगे दाय बाबा से बड़का बाबा बरुआ लेल बिलमाय।
बाबी से अइलथ बाबी भीख नेने ठाढ़ि।
आगे माइ भिखो ने लियै बरुआ मुँहो सँ ने बजाय।
पहिरय लय पीयर धोती ओढ़य लेल मांगल चादर।
आगे माय हाथ दुनु मंट्ठा माँगे कान दुनु सोन।
आगे माइ मिथिलाक रुसल बरुआ काशी कियै जाय।

पुरोहित के गारि-

बकलेल बभना चूड़ा दही चाटय ऐला हमर अंगना।
चाउर देलियनि दालि देलियनि धेलनि अंगना।
एक रत्ती नोन लय करै छथि खेखना।
धोती देलियनि तौनी देलियनि धेलनि अंगना।
एकटा गमछा ले करै छथि खेखना।
सोन देलियनि चानी देलियनि धेलनि आंगना।
एकटा पाइ ले कोना करै छथि खेखना।

जनउ कालक गीत-

लाल पीयर अछि माड़ब पाने पात छारल हे।
ताहि माड़ब बैसलाह बाबा से फल्लाँ बाबा हे।
बगल भए बैसलखिन बाबी से ऐलब बाबी हे।
कोरा बैसौलनि बरुआ से फल्लाँ बरुआ हे।
बरुआ जेमँगे बाबी लाल पीयर जनऊ दिय हे।
रहु-रहु बाबू आइ अहाँ ब्राह्मण होएब हे।
कि लाल जनऊआ देब हक कि पियर जनऊआ हक।

चुमाओन कालक गीत

आइ शिवक चुमाओन हेमन्त घर मे।
सखि सब गाबै मंगलाचार हेमन्त घर मे।
आंगन चानन निपू मनाइन गजमोती चौक पुराइ।
काँचहि बाँस के उलवाँ बुनाओल।
ताहि राखब दूभि धान हेमन्त घर मे।
चुमबै बैसली सासु मनाइनि।
गौरी सहित त्रिपुरारी हेमन्त घर मे।
दुबि अक्षत लय मुनि सब आयल।
जय जय शब्द सुनाय हेमन्त घर मे।

दलसी आ बिलोकी कालक गीत-

(1)
अमुआ मजरि गेले महुआ मजरि गेले।
ताहि तर फुललाँ छिनरो ठाढ़ि नयना सँ नीर झरे।
घोड़वा चढ़ल एलखिन फुललाँ रसिलवा किये छिनरो एकसरि ठाढ़ि।
सासु मोरा आन्हर ननदि गेल निज घर, मोर पिया गेल परदेश।
नयना......
छोड़ि दिले छिनरो घरवा दुअरवा, छोर बिछुआ के आस।
नयना........

(2)
नामि नामि कोसिया मे जुटिया गूथबिह लटका के चलिहह ना।
छिनरो गोरी बदन बिछा के चलिहह ना।
पतरी कमरिया मे उरकस पहिरि लचका के चलिहह ना।
गोरे कलइया मे घड़ी पहिरि देखा के चलिहह ना।
गोरे-गोरे अखिया मे सुरमा लगाबिह मचका के चलिहह ना।

बेटा विवाह

विवाहक लेल जइ कालक गीत (कुमार)

(1)
जहि दिन आहे बाबू तोरो जनम भेल, अन्न पानि किछु ने सोहाय हे।
सेहो बाबू चलला गौरी विआहन, दुधबाक दाम दहु ने चुकाय हे।
दूधक दाम अम्मा सधियो ने सकइछ, पोसाइक दाम दै देव हे।
जावत जीव अम्मा सधियो ने सकइछ, धनी हेती नौरी तोहार हे।
नित दिन आहे अम्मा चरण दबेती, भोरे उठि करती प्रणाम हे।

(2)
पाकल पान के बिड़िया लगाओल
नगर मे पड़ल हकार।
आबथु देवलोक बैसथु माड़ब चढ़ि,
सब मिलि साजु बरियात हे।
कौने बाबा साजल आजन-बाजन
कौने बाबा साजु बरियात हे।
कौने बाबी साजल दुलहा दुलरुआ,
झलकैत जायत बरियात हे।

(3)
साँठल आहे आमा सिन्दुरक पुरिया, नगर मे पड़ल हकार हे।
साजल आहो बाबा दुलहा दुलरुआ, दूर जायत बरियात हे।
जखनहि रामजी कोबर बिच आयल, सरहोजि छेकल दुआरि हे।
हमरा के दान दीअ ननदोसिया, तखन कोबर देब पैर हे।
मोरा कुल आहे सरहोजि बहिनी ने जनमल, राम लखन दुहु भाइ हे।
सेहो भाइ मोर संगहि अयलाह, सरहोजि मांगथि दहेज हे।

बरियातीक गीत

(1)
ऊँची महलिया मालिनि के घर, नीचा लागल फुलबारी हे।
ले गे मालिनि सोनाक सूइया, बाबू के गूँथि दे मौरि हे।
मौरि लय आयल मालिन, कहलक के देत मौरक दाम हे।
घर सँ बाहर भेला फल्लाँ बाबा, हम देब मौरक दाम हे।

(2)
कौने बाबा सजल घोड़ हाथी कौने बाबा साजु बरियात हे।
कौने दुलहा साजथु रहिमल घोड़ा साजि चलल बरियात हे।
तिल एक आहे बाबू घोड़ा बिलमाव अमा गोर लागि लिय हे।
जुड़हि जैतह बाबू जुड़हि अबिहह जुड़हि होयत विवाह हे।
रहमल घोड़ा सलामति रहतै शुभ2 होयत विवाह हे।

नगहर भरबाक गीत-

भरय चलली सखि सिरहर नव कलश मँगाइ।
चानन सिरहर उर लय शुभ सिन्दुर लगाइ।
सागर तट जब पहुँचल सब नारी।
सिर सँ कलश उतारल देल आमक डारी।
लोचन प्रीत जुड़ायल सब मिलि मंगल गावे।
सब के ई दिन होय विधाता लिखथि भागे।

शुभ कार्य मे विदा लेबाक कालक गीत

शुभे ल बहार भेलि बेटीक माय,
काहु हाथ नारियल काहू दूबि धान,
काहू खोंइछा साँठल पाकल पान
भैया हाथ नारियल भौजी दूबि धान।
अमा खोंइछा साँठल पाकल पान।
आजू मोरा आजू मोरा उचित कल्याण,
दीअहु हे तरुणी सिन्दुर पिठार।

बेटीक विआह (कुमारि गीत)

(1)
कौने वन बोले कारी कोइलिया
कौने वन बोले मयूर हे।
कौने घर बोले सीता हे दुलारी
आब सीता रहति कुमारि हे।
आनन्द वन बोले कारी कोइलिया
निकुंज वन बोले मयूर हे।
राज जनक घर सीता बेटी बोले
आब सीता व्याहन जोग हे।
जनक आहो बाबा राज अयोध्या
जहाँ बसै दशरथ राज हे।
राज दशरथ के चारि पुत्र छथि
राम लखन दुइ वीर हे।
गोरहि देखि जनु भुलिहें हो बाबा
श्यामहि तिलक चढ़ैब हे।
अपन जोग बाबा समधि जेहब
नगर जोकर बरिआत हे।
सीता जोकर बाबा लायब जमैया
देखत जनकपुरक लोक हे।

(2)
जाहि दिन आहे बेटी तोहरो जनम भेल से दिन कहलो ने जाय।
चिन्ता निन्द हरित भेल बेटी धीर नहि रहल गेयान।
कथी लय आहे सियाक जनम भेल से भेल व्याहन योग
से सुनि बाबा उठला चेहाय चलि भेला ताकयं जमाय।
बाँध बनबिहह बाबा पोखरि खुनबिहह लगबिहह आमक गाछ।
हँस जुटत आ कमल फुलायत जल मारत हिलकोर।
ई सरोवर जेतुक नहि माँगत भैया होयता बेहाल।

दरबाजापर बरियाती एलापर-

(1)
आउ आउ आहे बहिना सखिया हमार हे।
रतन पलकिया चढ़ि आयल चारु दुलहा।
हाथी घनेरो आहे घोड़ा हजार हे।
कतेक बरियाती आबे पाबी न पार हे।
जेहने कुमारि तेहने चारु कुमार हे।
तिरहुत के नर नारी देखय मुँह उघारि हे।
लग भऽ जाऊ बहिनि लाज बिसारि हे।
गाओल सिनेहलता मन के उसारि हे।

परिछनक गीत

(1)
शिव छथि जागल लागल दुआरी हे बहिना, शिव छथि लागल दुआरी।
इन्द्र चन्द्र दिक्पाल वरुण सभ, चढ़ि-चढ़ि निज असवारी।
साजि बरात हेमन्त घर आयल, नगर शोर भेल भारी।- शिव...
पुरहित ब्रह्मा चारु मुख लय, वेद ऋचा उचारी।
दाढ़ी झुलबैत अगुआ नारद, ब्राह्मण वीणा धारी।- शिव...
परिछय चलली माय मनाइनि, लय कंचन दुइ थारी।- शिव...
पटकि आरती घर के पड़ली, नाग छोड़ल फुफकारी।- शिव...
योगन गण मण्डप बीच आयल, भरि गहना पेटारी।
तखन ससरि मण्डप दिशि आयल देखल सभ नर-नारी।- शिव...
हरलहरा के काड़ा, पहुँची पनिया दरारी।
ढोढ़क जोसन सुगवा के सुनरी, मनटीका मनिहारी।
ढोरक करेत आ अजगर, अधसर के पटमारी।
धामन करधन गेहुँली गहुमन, नागक नथिया भारी।- शिव...
जेहने बर तेहने बरियाती, तेहने गहना सारी।
शिव छथि लागल दुआरी, हे बहिना शिव छथि लागल दुआरी।

(2)
चलु सखि सब देहरि पर साजू डाला पान हे।
आनि ठक बक दीप लेसू परिछु सीताराम हे।
हरखि चलू बरियात बरियात आयल राज भवन समीप हे।
आइ अछि बड़ भाग हे सखि राम दरशन देल हे।

(3)
सीता करथि बिलाप तन थर-थर काँप।
धनुषा केओ नहि तोड़ल जनकपुर मे।
आब हम रहब कुमारि घर बैसल हिय हारि
बिनु पुरुषक नारि जनकपुर मे।
घर मे बैसब आब जय, अपन वयस गमाय।
मरब जहर-बिख खाय, जनकपुर मे।

(4)
धीरे-धीरे चलियौ दुलहा अंगना हमार हे।
अंगना मे होयत दुलहा विधि व्यवहार हे।
सरहोजि दाइ लेती नाक पकड़ि हे।
लग कनी अबियौ दुलहा लाज बिसारि हे।
धुनेश के झाँपल मुँह करियौ उघार हे।

सिताजी के माय सुनयना आरती उतारु हे।

कपड़ा उतारै कालक गीत-

माइ हे नाक दबाय कऽके जाँचू बहिना।
दाइ हे योगी छथि कि भोगी से बुझबनि कोना?
कपड़ा निकालि बनी देखियनु बहिना।
दाइ हे रोगी छथि कि भोगी से बुझबनि कोना?
माइ हे हाथ पैर नीक जकाँ जाँचू बहिना।
हाथ पैर ठीक छनि कि नहि से बुझबनि कोना?
घुमाय फिराय कऽ के देखियनु बहिना।
माइ हे नांगर छथि कि ठीक से बुझबनि कोना?
दाइ हे बजाय झुकाय बऽके देखियनु बहिना।
पण्डित छथि कि मूर्ख से बुझबनि कोना?

पाग उतारै कालक गीत-

जे एहि घर के आंगन अनलनि हुनका देबनि गारि हे।
धोती पहिरक लूरि ने हिनका पाग खसल जाय हे।
देह परहक वस्त्रो जे छनि सेहो अनलनि माँगि हे।
ठक बक किछुओ नहि चिन्हथि हिनका देबनि फेरि हे।
अक्षरक ज्ञान कनियो ने हिनका नित करथि चरबाहि हे।
सूने कवि इहो पद गेलनि गौड़ीक बड़ दिअमान हे।
चतुर घटक इहो वर अनलनि हिनके दियनु बियाहि हे।

नाक धरक गीत-

सिर स पाग उतारल काँख दबाओल हे।
लय ओपटा गिलमोहार नाक धय आनल हे।
दुधहि चरण पखारल निहुरि निहारल हे।
हिनको परिछि घर आनल परिछि देखओल हे।

ठक बक चीन्हक गीत-

चलू चलू दुलहा अंगना हमार यो।
अंगना मे होयत दुलहा विधि व्यवहार यो।
ठक के कहलनि दुलहा मारिक मुरुत यो।
दुलहाक माय केहन छिनारि इहो ने सिखेलखिन हे।
हुनकर काकी केहन छिनारि इहो ने सिखेलखिन हे।
बेसन के कहलनि दुलहा घारि यो।
दुलहाक पीसी केहन छिनारि इहो ने सिखेलखिन यो।
भालरि के कहलनि दुलहा केरा के पात यो।
दुलहाक बहिन केहन खेलारि इहो ने सिखेलखिन यो।
मूज के कहलनि दुलहा इ थीक कोर यो।
हिनकर पितामही केहन खेलारि इहो ने सिखेलखिन यो।

आंगन जयकालक गीत-

चलु धीरे धीरे ललन ललीक अंगना
ई आंगना नहि बुझब अवध के
दौड़ल चलब मन मानत जेना। चलु.....

गमकैत फूल कियारी लागल
हीरा पन्ना गमला साजल
बेली चमेली गुलाब दोना। चलू....
एहेना फुल रहय मिथिला मे
बारहो मास ओ तीसो दिना। चलू....
देखथि दुलहा ठाढ़ अँगना। चलु....

अठोंगर कुटै कालक गीत-

हम धनमा कुटब एहि बरबा मे।
घुरि फिरि आयल अवधबा मे।
की ब्रह्मा की नृपति बालक।
बुझथि उखरि मूसरबा मे।
घुमि घुमि धान कुटै छथि बालक।
विवश भेल बेवहरबा मे।
चौदह भुवन ई अनका बन्है छथि।
आइ बन्हिथनु काँच डोरबा मे।
स्नेहलता ई गाओल अठोंगर।
रानी विलोकति घरबा मे।

नैना-योगिनिक गीत-

पहिल योगिनिया तोहे अपन सासु हे।
आब दुलहा भेलहा योगिनिया बसी हे।
आलरि- झालरि कन्ह कारु सिर बेनिया हे।

गीतसँ पहिनेक फकड़ा

थिको बंगालिनि बसी, बंगला सुरपुर स आयल छी
सूखल नदिया नाव चलाबे, बिन लेसन के दधि जमाबे।
चुल्हिक पुत्ता सारि उपजाबे, कोठी पर जे बड़द नचाबे।

कन्या निरीक्षण कालक गीत-

देल आमक पल्लव आमक पल्लव हे।
चिन्हू बाबू चिन्हू धानि, अपन चिन्हि जुनि भूलव हे।
रघुकुल के एक रीति, तकर सुधि राखब हे।
आहे! हेरथि नहि परनारि, से तखनहि जानब हे।
चारु ललन चित्त चंचल करे उगमग स्थि हे।
आहे! आजु असल थिक जँच नृपति घर आयल हे।
यद्यपि चारु कुमार कुलक पति(पैत) राखल हे।
सब सखि देल स्कार ललन कहि राखल हे।

ऐ अवसरक फकड़ा-

काँच बाँस काटि के, बंगला घर छाड़ि के, दहिन लट झाड़ि के.
वाम छथि कनियाँ दहिन छथि सारि, उठाउ प्रथम वर हृदय बिचारि।
जौं नहि चिन्हब अपन नारि, हँसती सखी सब थपड़ी पाड़ि।

आम महु विवाहक गीत-

उठु उठु कामिनि छोड़ह लाज,
द्वार लागल छथि पाहुन समाज।
आयल दशरथ साजि बरियात,
फुलह फलह सखि नव जल जात।
मन जे आँकल गेल तुलाय,
सुनतहि सीता गेली फुलाय।
गद्गद स्वर बड़ होइछ लाज,
आजु देखत मोहि ससुर समाज।

धोबिनक सोहाग

धोबिनक बेटी झट दहिन सोहाग गे
राज जनक जी के एक गोट बेटी।
सिन्दुर पिठार लय मुँगरी पुजबली,
लय धो दहिन सोहाग गे। धोबिन...
गुर चाउर लऽ मुँह मे खुअबली
कोचा धो दहिन सोहाग गे। धोबिन....
सुकुमारि धिया के सोहाग दही ने,
खय के देखौ चूड़ा दही।
पहिरय के देखौ साया साड़ी
जेवर देखौ लटकाय। सुकुमारी....
देखौ मे देखौ गाय महिसबा,
जोड़ा बड़द देखौ हकाय। सुकुमारी....

वेदी घुमय कालक गीत-

(1)
गरदनि बान्हल चदरिया आगू-आगू सिया माई।
करथिन मण्डप परिकर्मा हे दुलहा और भाई।
बरहा जहाँ सभ घुमथिन हे न चलय प्रभुताई।
गाबथि मंगल गाइनि हे सब मंगल छाई।
हँसी अली मुस्काथि छनहि देथि पीहकारी।
से सुनि हँसि कऽ जाय हे देल परिक्रमा सारी।

(2)
नहु नहु दुलहा चले छथि कोना।
जेना कछुआ के बच्चा घुमै जेना।
बड़द के उपमा हुनका देलियनि कोना।
माई हे चौरासीक फन्दा मे पड़लनि जेना।
तेग नमरू कऽ दुलहा चले छथि कोना।
माई हे खुट्टा स बड़दा खुजै जेना।
बरदाक उपमा हुनका देलियनि कोना।
माई गे चौरासीक फन्दा मे पड़लनि जेना।
अंगना मे ठाढ़ दुलहा लगै छथि कोना।
जेना अंगना मे मेह गाड़ल हो जेना।
मेहक उपमा हुनका देलियनि कोना।
जेना चौरासीक फन्दा मे पड़ला जेना।
करथि सिनेहलता चलथ कोना।
माई गे आंगुरक इसारा देब जेना-जेना।

कन्यादान कालक गीत-

कोनहि कुल मे सीता जनम लेल, कोनहि कुल श्रीराम हे।

कौनहि आगे माइ वेद उचारल कौनहि कैल कन्यादान हे।
राजा जनक घर सीता जनम लेल दशरथ घर श्रीराम हे।
नारद ब्राह्मण वेद उचारल जनक कयल कन्यादान हे।
राजा जनक देल हीरा मोती सोनमा आओर देलनि धेनु गाय हे।
रानी सुनयना देल सीता संग बेटी राम लेल अंगुरी लगाय हे।
कहमा छुटल सुपति मौनियाँ कहमा जनक ऋषि बाप हे।
कहमा छुटल माय सुनैना जिनका झहरनि नोर हे।
अंगनहि छुटल सुपति मौनियाँ दुआरे जनक ऋषि बाप हे।
मंदिर छुटल माय सुनैना जनिका नैन नोर हे।

सिन्दुरदान गीत-

पाहुन सिन्दुर लिय हाथ, संग सुपारीक साथ।
        सिता उधारल माथ सिन्दुर लिय अथ।
सुन्दर छिते अछि लगन, अहाँ धनुष कयल भगन।
        सब आनन्द मगन, आशिष दिय अथ।
रघुबर सिर शोभनि मौर, सीता नित पूजथि गौर।
        आइ पूरल मनोरथ नरपति होय लय।
महिमा दुनूक अनूप, सब आनन्दित भूप।
        आइ पूरल मनोरथ आनन्दित होय लय।

लावा छिड़ाबा कालक गीत-

मैना देखहुँ जाय,
त्रिभुवन पति भेल अहाँक जमाय।
शिव गौरी मिलि लावा छिड़िआय।
भूखल वासुकि बिछि- बिछि खाय।
सोनाक बट्टा भरि घोरल कसाय।
उमत सदाशिव भसम लोटाय।
जय मे देल अंकुसी लगाय।
झिकतहि सुरसरि गेलि बहराय।

विआहक गीत-

मचिया बैसल तोहे राजा हेमन्त ऋषि, सुनू अहाँ बचन हमार यो।
गौरी कुमारि कते दिन रहती, ई नहि उचित विचार यो।
एतबा वचन जब सुनल हेमन्त ऋषि, पंडित अनलनि बजाय यो।
आबथु पंडित बैसथु पलंग चढ़ि, सुनि देथु धीया के विआह हे।
एक पोथी तकलनि दोसर पोथी तकलनि, तेसर मोथी तकलनि पुरान यो।
ओहि रे जंगल मे योगी एक बसै छथि, तनिके संग धिया के विआह यो।
अरही वन के खड़ही कटाओल, वृन्दावन बिट बाँस यो।
देव पितर मिलि माड़व ठानल, होबय लागल धिया के विआह यो।
एक दिस बैसला नारद ब्राह्मण, दोसर दिशि गौरीक बाप यो।
बाघक छाल पर बैसला महादेव, होअय लागल धिया के विआह यो।
कन्यादान कय उठला हेमंत ऋषि, मोती जेंका झहरनि नोर यो।
किए जे खेलौ बेटी किए पहिरलौ, कथी ले भेलहुँ वीरान यो।
खीर जे खेलौ बाबा चीर पहिरलौ, सिन्दुर ले भेलहुँ वीरान यो।

देसी छेकक गीत-

छोड़ब नहि दुआरि सुनियौ रघुनन्दन।
जौं रघुनन्दन चलला कोवर घर सारोजि छेकल दुआरि।

नेग बिना दय पैर बढ़ायब देब गारि हजार यौ, सुनियौ रघुनन्दन ...
पाँच पदारथ हरि जीक संग मे एक सरहोजि एक सारि यौ, सुनियौ...
जौं नहि देता सात पदारथ बेचता बहिन भाय यौ। सुनियौ....

बरियाती खेबा कालक गीत-

(1)
समधि गारि नइ दै छी विनती करै छी,
समधिक माए पितिआइन गोअरबा के दै छी।
गोअरबा सँ दूध मंगबै छी, लके समधि जिमबै छी। समधि...
समधि के दादी नानी ल बनियाँ के दै छी
बनियाँ सँ चीनी मंगा समधि के दै छी।- समधि....
समधि क मौसी पीसी ल मउबड़िया के दै छी।
मउबड़िया स धेती कीनि समधि के दै छी।- समधि गारि....

(2)
निज कुल कामिनि समधिन छिनरो महिमा आम अपार।
सगर नगर घर एको ने छोड़लनि के थिक अपन परार।
बनियाँ मे जे फल्लाँ के गछलनि जिनका टाका हजर।
पठूआ मे जे डाक्टर के गछलनि जे भोकतनि सूई बारम्बार।
राजपूत मे जे फल्लाँ के गछलनि जनिका ढाल-तलवार।
गोआर मे जे फल्लाँ के गछलनि जिनका धेनु हजर।
सोनरा मे जे फल्लाँ के गछलनि जनिका जेवर भण्डार।
तमोलिन मे जे फल्लाँ के गछलनि के करतनि उपर लाल।

कोबर गीत-

(1)
कोने बाबा बान्हल इहो नव कोबर हे जनकपुर कोबर।
कोने अम्मा लिखल पूरैन हे जनकपुर कोबर।
फल्लाँ बाबा बान्हल इहो नव कोबर फल्लाँ अम्मा लिखू पूरैन हे।
ताहि पैसि सुतय गेला फल्लाँ दुलहा सीता कोबर धय ठाढ़ि हे।
बैसू सीता दाइ लाले रे पलंगिया बुझि लिय हमरो गेयान हे। जनकपुर

(2)
नव खटिया नव पटिया नव सब पुरहर हे।
आहे नव नव जोड़ल सिनेह सोहाग राति निन्द नहि हे।
ताहि पैसि सुतलाह फल्लाँ दुलहा संग सिया दाइ हे।
सीताअति सुकुमारि सोहाग राति निन्द नहि हे।
हटि सुतु हटि सुतु ससुर जी के बेटिया अहाँ धामे गरमी बहुत हे।
एतबा वचन सुनि कनियाँ सुरुवे रुसि बाहर चलि जाइ हे।
हम नहि धुरबै ककरो वचनियाँ कोबरक वर बड़ ठेकर हे।

चतुर्थीक कालक गीत-

बर रे जतन सासु मौहक रान्हल खिरियो ने खाथि जमाय।
गे माइ गौरी जय दहिन भरि बैसलि थार बदल दुइ भेल।
मनाइनि जाय पाँछा भय बैसलि वर करा एक देल।
गे माइ सेहो करा हम कुकुर जिमायब से पान वर के देल।

घरभरी कालक गीत-

माय मनाइनि पान लगाबथि सब मिलि कैल ओरियान।
आइ रिकनि घरभरी सखि हे धीया जीओ मोर जाय।
धान-पान देल हाथहि सखि हे दुनू मिलि देलि छिउआय।
भनहि विद्यापति गाओल सखि हे सब बेटी सासुर जाय।

खोंइछ भरैक गीत-

सगर जनम हम आस लगाओल,
भैया करता बिआह गे माइ।
भौजी के खोंइछा मे हीरा मोती आओत,
ताहि लय गहना गढ़ायब गे माइ।
तेहन घर ने भैया बिआहल
भौजी खोंइछ दुबि-धान गे माइ।
जनु कानू जनु खीजू बहिन दुलरुआ,
हम देब गहना गढ़ाय गे माइ।

कोबर पराती-

अब ने विलासक बेरि हे माधव,
आब ने विलासक बेरि।
मुखहुक पान विरस सन लागत,
दीपक जोति मलीन।- हे माधव.....
चेरिया आय बहारय आंगन,
चन्द्रक जोति मलीन।- हे माधव.....
ग्वाला आय गौ दूहन लागे,
बछड़ उगारि बन गेल। - हे माधव......
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस को,
सुर्य उदय भय गेल।- हे माधव.......
कनियाँ मुँह देखैक गीत-
सुनू हे सखिया पिया मुँह देखू शुभ काल।
पहिने जे देखथि सासु कौशिल्या,
देखू हे सखिया मोहर देखि शुभ काल।
तखन जे देखथिन गोतनि बड़ैतिन।
देखू हे सखिया कंगना देथि शुभ काल।
तखन जे देखथिन ननदि बड़ैतिन,
देखू हे सखिया टाका देथि शुभ काल।
तखन जे देखथि पर-परोसिन,
आशीष देथि शुभ काल। सुनू हे सखिया....

कोबर नीपै कालक गीत-

नीक नीपू नीक नीपू दुलहिनिया।
नहि नीक नीपब ते सुनब कहिनिया।।
कुम्हराक बेटी अहाँ थिकहुँ दुलहिनिया।
माटि आनि नीपू नइ ते सुनब कहिनिया।
जोलहाक जनमल थिकहुँ दुलहिनिया।
पाट आनि नीपू नइ ते सुनब कहिनिया।
बनियाक बेटी अहाँ थिकहुँ दुलहिनिया।
पानि आनि नीपू नै ते सुनब कहिनिया।

कोबर नीपै काल कनियाँ क ठकैक गीत-

देखू देखू हे सखि सीता रुसि रहली,

आधा निपलनि कोबर आध छोड़ि बैसली। - देखू-देखू .....
सीताक बापकेँ बजाउ, सीता माए केँ बजाउ
की सब सीता के सिखा क बदा कयली। - देखू....
सुनलनि सासु कौशिल्या हाथ मोहर धयली
कंगना गढ़ायब टीका मंगायब सीता किए रुसली।- दुखू-देखू...

गौरी पूजाक गीत-

गौरी पूजय चलल रुक्मिनि संग सखी दस पाँच यो।
तीन फूल लय गौरी पूजल बेली चम्पा गुलाब यो।
तीन सिन्दुर लय गौरी पूजल मोटिया पीपा अचीन यो।
तीन नैवेद्य लय गौरी पूजल नेबो नारंगी अनार यो।
तीन वस्त्र लय गौरी पूजल लाल पीयर पटोर यो।
तीन बेरि कल जोरि पूजय लय गंगाजल नीर यो।

हरीर पानक गीत-

रतन सिंहासन बैसथु सुलपाणि
खाथि ने हरीर पान पीबथु जूड़ी पानि।
जेहने महादेव के गौरी दाइ परान
तेहने फल्लाँ दुलहाके फल्लीं दाइ परान।
जेहने रामचन्द्र के सीता दाइ परान
तेंहने फल्लाँ दुलहा के फल्लों दाइ परान।
जेहने हरीर खेने मधुर पानि
तेहने फल्लाँ दुलहाक फल्लों दाइ मधुर हे।

मुट्ठी खोलैक गीत-

सखि मुट्ठियो ने खोलय जमैया
हे हारि गेला रघुरैया।
हमरो सीता मुट्ठी कसि के बान्हल
खोलियो ने सकला जमैया हे हारि गेला...
हमरो सिया दाइक कोमल आँगुर
धीरे स खोलब जमैया हे। हारि गेला...

चतुर्थीक कालक गीत-

चलु चलु कामिनि कर असनान।
प्रखर भानु मुख करत मलान।
शीतल सुरभीत जल धार देल।
पंकज नायक नभगत भेल।
आजु चतुर्थीक अवसर थीक।
किछुओ ने सिजाह लोहित सारि।
लहु लहु जल सम ढारब बारि।
दुहु जन रहु गय अमर कहाय।
वरुण देव नित रहथु सहाय।
कुमर चतुर्थीक उत्सव तोर।
विधिकरी विधि करु भऽ गेल भोर।

नवकालक गीत-

राम लखन सन सुन्दर वर के जुनि पठियनु केओ गारि हे।
केवल हास विनोदक पुछिअनु उचित कथा दुइ चारि हे।
प्रथम कथा ई पुछिअनु सजनी कहता कनेक विचारि हे।
गोरे दशरथ गोरे कौशल्या, भरत राम किएक कारी हे।
सुनु सखि एक अनुपम घटना, अचरज लागत भारी हे।
खीर खाय बालक जनमौलनि, अवध पुरी के नारी हे।
अकथ कथा की बाजू सजनी, रघुकुल के गति न्यारी हे।
साठि हजार बालक जनमौलनि सगरक नारि छिनारि हे।
नेहलता किछु आब ने कहियनु, एतबे करथि करारी हे।
हँसी खुशी मिथिला मे जेता, पठा देता मस्तारी हे।

वेदी उखारै कालक गीत-

सखि यदि एक बापक बेटा हेता
दोसर हाथ ने लगेता हे।
दू बापक बेटा हेताह
तखने दोसर हाथ लगोता हे।
दू कोन के वेदी उखारलनि
तेसर आंगन मे ठाढ़ हे।
कहियनु गऽ सासु ससुर सँ
आंगन मे रुसल छथि जमाय हे।
कहियनु जय जमाय बाबू सँ औंठी देवनि गढ़ाय हे।

परिछा सासुक कालक गीत-

रघुवर परिछा देलनि ओछाय
सीता फेकल जुआय कोवर घर मे।
गाबथु मंगल गीत गाय विधिकरी विधि कराय।
सखि सब करथि विनोद कोवर घर मे।
कहथिन सरहोजि बुझाय जुनि अहाँ अगुताइ।
विधि करियौ आइ कोवर घर मे।

सौजनक गीत-

मेही भात जतन भनसीआ
साँठि लयल भरि थारी जी,
राहड़िक दालि बरा भरि उत्तम
ताहि देल घी ढारी जी।
ओल परोर तरल तरकारी
खटरस भोग लगावे जी।
मलिसिक दही छाँछ भरि उत्तम
परस्थ प्रेम पियारी जी।

दही खयबा कालक गीत-

हे वर दही किये ने खाइ छी
माय अहाँक गोआरक बहु छथि
अहाँ संग किएक ने लयलहुँ
संग संग अयली टीसन सँ घुरली
टीकट मास्टर देखि डेरेयली
हे वर चीनी किये ने खाइ छी
माय अहाँक छथि बनियाक बहुआ
संग किये नहि अनलहुँ
संगे अयली दरबजा सँ घुरली
समधी देखि डेरेयली। हे वर...

चित्री सातक गीत-

भितिया मे चितिया साटि हे योगिया
जाहि ठाम लागल सिन्दुर पिठार।
जहाँ जहाँ सुमिरन करबै रे योगिया
रखिहे हिरदय लगाय।
नून तेल पैंच लेल सिन्दुर सपन भेल
पिया भेल डुमरीक फूल। भितिया....

मधुश्रावणी- पौराणिक गीत-

(1)
विनती सुनियौ हे महरानी, हम सब शरण मे ठाढ़।
अक्षत चानन अहाँ के चढ़ायब, आरती उतारब ना।
बेली चमेलीक माँ के हार चढ़ायब अड़हुल चढ़ायब ना।
करिया छागर धूर बन्हायब, उजर चढ़ायब ना।

(2)
महिमा तोहर अपार हे जगजननी महिमा तोहर अपार हे।
बामे खप्पर दहिने कतारहे सोनितक धार हे महिमा.....
पहिरन चीर गले मुण्डमाला पैर मे नुपुर अपार हे।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के सदा रहिय रखवार हे। महिमा....

विसहराक गीत-

साओन मास नागपंचमी भेल।
बिसहरि नइहर सोहाओन भेल।
केओ नीपे नइहर केओ चौपारि।
हमहीं अभागिन निपी दुआरि।
केओ तोड़े अड़हुल केओ बेलपात।
हमहू अभागिन हरिअर दूबि।
केओ माँगे अन्नधन केओ माँगे पूत।
हमहू अभागिन सिरक सिन्दुर।

पावनिक गीत-

पावनि पूजू आजु सोहागिन प्राण नाथ के संग मे।
कारी कम्बल झारि गंगाजल काजर सिन्दुर हाथ मे।
चानन घसू मेहदी पीसू लिखू मैना पात मे।
पावनि साजि भरि-भरि आनल जही जूही पात मे।
कतेक सुन्दर साज सजल अछि लिखल मैना पात मे।

आँखि मूनौ कालक गीत-

नहुँ नहुँ धरु सखी बाती, धरकय मोर छाती।
नहुँ नहुँ पान पसारह नहुँ नहुँ दृग दुहु झाँपह।
मधुर मधुर उठ दाह मधुर मधुर अवगाहे।
कुमर करह विधि आजे, मधुश्रावणी भेल आजे।

टेमी दागक गीत-

कदली दल सन थर थर काँपय मधुश्रावणी आजे।
सकल सिंगार सम्हारि साजथि सब मधुमय कैल समाजे।
कमल नयन पर पानक पात दै नागर जखनहि झाँपे।
विधकरी हाथ चन्द्रकर बाती देखि सगर तन काँपे।
आजु सोहागिन सहमल बैसल मुख किये पड़ल उदासे।
अम्बा मुख हेरय किये कामिनि पल पल लैह उसासे।
कुमर नयन सँ नोर बहलबह गाइनि गाबथि गीते।
बड़ अजगुत मधुश्रावणी विधि परम कठिन इहो रीते।

बरसाइति-

बड़क पूजाक गीत-

जेठ मास अमावस सजनी गे सब धनि मंगल गाव।
भूषण वसन ठीक करु सजनी गे रचि रचि आँग लगाव।
काजर रेख सिन्दुर भेल सजनी गे पहिरथु सुबुधि सयानि।
हरषित चललि अछयवट सजनी गे गबितहि मंगल गाने।
घर घर नारि हकारल सजनी गे आदर सँ सभ गेलि।
आइ थिक बड़साइति सजनी गे तैं आकुल सभ भेलि।
घुरमि-घुरमि जल ढारल सजनी गे बाँटल अछत सुपारी।
फतुर लाल देल आशिष सजनी गे जीबथु दुलह दुलारी।

(2)
कतेक जतन भरमाओल सजनी गे, दै दै शपथ हजारे।
सपनहुँ छल जौं जनितहुँ सजनी गे, नहि करितहुँ अंकारे।
आब जगत भरि मानिनि सजनी गे, केओ जनि करय पिरीते।
मुँह सँ अधिक बुझाबथि सजनी गे, वचन त राखथि थीर
हुनक हिया दगधल मोर सजनी गे, जनु नलिनी दल नीर।
गुन अवगुन सब बुझलहुँ सजनी गे, बुझलहुँ पुरुषक रीत।
भनहि विद्यापति गाओल सजनी गे, पुरुषक कपटी प्रीति।

कोजागरा चुमाओन-

भैया के करियनु चुमाओन कोजागरा मे।
बाबू जी पुछि पुछि परसथि मखान भोजागरा मे।
आंगन चानन नीपल गेल अछि।
गजमोती चौक पुराय देल अछि।
भैया के कहिओन चुमाओन कोजागरा मे।
मानिक दीप जराओल दय दय।
काँच बाँस के डाला लय लय।
भैया के करियौन चुमाओन कोजागरा मे।

पचीसी गीत-

खेलू खेलू यौ भैया बाजी लगाइ के।
सीता जीतथि रामजी हारथि बाजी लगाइ के।
सखि सब देथिपिहकारी बाजी लगाई के।
सीता हारथि रामजी जितथि बाजी लगाइ के।
सखी सब गेल लजाय बाजी लगाइ के।
धन्य धन्य सखी हम मिथिलावासी।
रामजी भेला जमाय बाजी लगाइ के।

जुआ खेलै लेल एल जनकपुर बाजी लगाइ के।
हारला भाय बहिन पितिआइन हे बाजी लगाइ के।

दुरागमन-कनियाँ परिछन-

सीता एली अंगना परिछन चलु सखि सब।
कथी के महफा कथी के लागल ओहार हे।
सोनाक महफा रेशमक लागल ओहार हे।
सीता एली अंगना परिछन चलु सखी सब।
कथी के साड़ी कथीक लागल किनारी हे।
रेशमक साड़ी गोटा लागल किनारी हे।
सीता एली अंगना परिछय चलू सखि सब।
कतय गेली सासु ओ ननदि जी हे।
सीता के अरिछि-परिछि घर लय चलू हे।
सीता एली अंगना परिछय चलू सखि सब।

चुमाओन गीत-

चुमाबहु हे राम सिया के चुमाबहु हे।
आंगन चानन निपल कौशिल्या, गजमोती चौक पुराइ हे।
अछत कलश लय पुरहर साजल मानिक दीप जराय हे।
काँचहि बाँस के डाला बनल अछि, दही ओ धान सजाई हे।
दूभि अक्षत लय मुनि सब अयला, शुभ शुभ शब्द सुनाई हे।
चुमबय बैसली मातु कौशिल्या, सखि सब मंगल गावे हे।

देहरि छेकक गीत-

राम सिया मिलि अयला अवधपुर, बहिन छेकलनि दुआरि हे।
हमरा दान देब जखन अहाँ भैया, तखन छोड़ब हम दुआरि हे।
सासु ससुर हमरा किछु नहि देलनि, कि देब अहाँ के देहरि छेकाइ हे।
हाथक औंठी भैया खोलि देलखिन, बहिन लेलनि देहरि छेकाइ हे।

खोंइछ भरक गीत-

सगर जनम हम आस लगाओल, भैया करताह विवाह गे माई।
भौजीक खोंइछ मे सोना चानी आओत, ताहि लय गहना गढ़ायब गे माई।
तेहना ठाम ने भैया बियहला, भौजीक खोंइछ दूभि धान गे माई।
सगर जनम हम आस लगाओल, भैया करताह विवाह गे माई।

मोरि बैसक गीत-

मोरि बैसल अहाँ अपन सासु, मुँह जनु अहाँ बाजब हे।
पुतहुँ होयत गलजोर, मुँह जनु अहाँ बाजब हे।
मोरि बैसल अपन पितिया सासु, मुँह जनु बाजब हे।
पुतोहू होयती गलजोर, मुँह जनु अहाँ बाजब हे।

कनियाँ मुँह देखैक गीत-

सुनु हे सखि सिया मुंह देखु शुभ काल।
पहिने जे देखथि अपन सासु कौशिल्या।

तखन जे देखथिन गोतिन बजैतिन।
तखन जे देखथिन ननदि बजैतिन।
तखन जे देखथि पर परोसिन सभ।
आशीष देथि सभ मिलि शुभ काल। सुनु हे सखि....

कोबर पराती-

आब न बिलमिअ बेर हे माधव आब न बिलमिअ बेर।
मुखहुक पान निरस सन लागय, दीपक जोति मलीन।
ग्वाला अबि गो दुहन लागे, गैया हमर बन गेल।
चेरिया अबि झारु दिये, सुरुज उदय भय गेल।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को चन्द्रक जोति मलीन।
आब न....

कोबरक गीत-

कोबर लिखय गेलि रानी कौशिल्या, चारु कात लिखल मयूर।
ताहि कोबर सुतला फल्लाँ दुलहा, संग लागि सीता सुकुमारि।
मुह उघारि सुन्दरि के पुछलनि कोन कोन आभरन हे।
हाथ कंगना अपन बाबा देलनि, सिकरी लखन देओर हे।
सिरक सिन्दुर प्रभु अहीं जे देलहु येह तीन आभरन भेटल हे।

कोबर नीपक गीत-

देखू देखू हे सखि सीता आइ रुसि रहली।
आधा निपलनि कोबर आधा छोड़ि बैसली।
सीताक बापके बजाउ ओ भाय के बजाउ।
की की सीता के सिखाय कइलनि विदा।
सुनि सासु कौशिल्या मोहर लेलनि हाथ।
कंगना गढ़ायब टीका गढ़ायब सिया किय रुसली।

कन्या पक्ष- तुलसी
गौरीक गीत-

फूल लोढ़य गेलि गौरी माली फुलबाड़ी
बसहा चढ़ल शिव आइ गेलाइ।
लोढ़ल फूल शिव देलनि छिरिआइ।
कनैत खीजैत गौरी अम्मा लग ठाढ़ि।
के तोरा मारलक के पढ़ल तोरा गारि।
हम नहि कहब अम्मा कहितहुँ लाज।
पूछू गय सखि सभके कहत बुझाय।

महेशवाणी-

हम नहि आजु रहब एहि आंगन, जौं बूढ़ होयत जमाय गे माई।
एक त बैरिन भेल विधि विधाता, दोसर धिया के बाप गे माई।
तेसर बैरी भेला नारद ब्राह्मण, हेरि लयला बूढ़ जमाय गे माई।
धोती लोटा पोथी पतरा, सेहो सभ लेबनि छिनाय गे माई।
जौं किछु बजता नारद ब्राह्मण, दाढ़ी धऽ देबनि घिसिआइ गेमाइ।
अरिपन लेपलनि पुरहर फोरलनि, फेकलनि चौमुख दीप गे माई।

धिया लऽ मनाइनि मन्दिर पैसलीह, केओ जुनि गाबथि गीत गे माई।
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइनि, इहो थिक त्रिभुवन नाथ गे माई।
शुभ-शुभ कऽ शिव गौरी विवाहू, इहो वर लिखल ललाट गे माई।

समदाओन

बारह बरस केर छल उमिरिया तेरहम बरस ससुरारि।
कौने निरमोहिया दिनमा पठाओल कौने निरमोही मानि लेल।
कौने निरमोहिया डोलिया फनौलक कौने निरमोही नेने जाय।
ससुर निरमोहिया दिनमा पठौलक बाबा निरमोही मानि लेल।
भैया निरमोहिया डोली फनौलकइ स्वामी निरमोही नेने जाय।
कथी देखि धीरज धरबह हे सखिया कथि देखि रहब लोभाय।

घरभरीक गीत-

माय मनाइनि पान लगाबथि सब मिलि कयल ओरियान।
आइ थिकनि घरभरी सखि हे धिया जीया मोर जाय।
धान पान देल हाथहिं सखि हे दुनु मिलि देल छिड़िआय।
भनहि विद्यापति गाओल सखि हे सब बेटी सासुर जाय।

अवसर विशेष वा सामयिक-
पावस-

नव घन गरजत माल।
एक सघन तिमिराछन्न रजनी कूजित दुतिय मराला।
तेसर सेज सुनि लखि पहु बिनु उठल अन्तर ज्वाला।
रहि-रहि चहुदिशि चपला चमकत विरहिनि जनु जिमि भाला।
खेपब राति कोन विधि सखि हे चिन्ता हृदय विशाला
हे जलधर अहाँ जाउ ततय झट जहाँ बसथि नन्दलाल।
कहबनि विनय चरण धय लखि कऽ आबथु शीघ्र कृपाल
जौं झट दऽ मोहन नहि औता करता निमिष अबेला।
तौं ब्रज मे एको नहि जीउति विरहिनि सब ब्रजबाला।

कजरी-

(1)
सखी हे पिया नहि घर अयला, मेघवा बरिसन लागे ना।
जौं हम जनितौं पिया नहि औता रखितहुँ हृदय लगाय।
हमरा सँ की त्रुटि भेल सखि हे आइ धरि नहि आय।
जौं जनितौं पिया ऐहन करता दितियनि नहि हम जाय।
सखी हे पिया नहि घर अयला।

(2)
सखिया सावन मे डर लागे जियरा धड़-धड़ धड़के ना।
श्याम घटा चहुँ ओर देखायत बिजुरी चमके ना।
पिया मोर परदेश गेल सुन सेजिया न भावे ना।
झींगुर दादुर मोर पपिहरा कोइली कुहुके ना।
सखिया सावन मे डर लागे ना।

उदासी- तिरहुत

(1)
मधुपुर गेल मनमोहन रे मोर बिहरत छाती।
गोपी सकल बिसरलनि रे जत छल अहिवाती।
सुतलि छलहुँ अपन गृह रे निन्न गेलौ सपनाइ
कर स छूटल परसमनि रे के लेल अपनाई
कत सुमिरब कत झाँखब रे हम मरब गरानी।
आनक धन लय धनवन्ती रे, कुबजा भेलि रानी- तिरहुत।

(2)
जखन चलल हरि मधुपुर रे सब सुरति निहारि।
आब कोना रहब हरि बिनु रे झाँखथि ब्रजनारी।
वन मे डोलय पिपर पात रे बहय सेमरि।
हम धनि डोलिय पिया बिनु रे बिनु पुरुषक नारी।
केहन कर्म विधि लिखलनि रे झाँखथि बृजनारि।
हरि बिनु भूषण भार भेल रे पलंगा ने सोहाई।

(3)
एते दिन भ्रमर हमर छल सखि हे,
आब गेल सारंग देश।
मधुपीबि भ्रमर लोभित भेल सखि हे।
मोहि किछु कहियो ने गेल।
ककरा-ककरा कहब, अपन दुख सखि हे,
नयन निन दुरि गेल।
जे बिरहे हम ब्याकुल सखि हे
भ्रमर हमर रुसि गेल।
आंगन मोर लिये बिजुबन सखि हे,
घर भेल दिवस अन्हार।
पुरुषक वचन ऐहन ठीक सखि हे,
सपतक नहि विसवास।

अवसर विशेषक गीत-

मलार-

(1)

अलि रे प्रीतम बड़ निरमोहिया।
आतुर वचन स्मर नहि मानय, परम विषम भेल रतिया।
काँपत देह धाम धमि आवत, ससरि खसत नव सरिया।
आवत वचन थीर नहि आनन, बहत नीर दुहू अँखिया।
रमानन्द भामिनि रहु धीर भय सुख बिच कहु दुख बतिया।

(2)

हे ऊधो लिखब कोन विधि पाती ।
अंचल पत्र नयन जल कज्जल नख लिखि नहि थीर छाती ।
चन्द्र किरण बध करत एतए पिय ओतए रहू दिन राती ।
रेशम वसन कनक तन भूषण तेसर पवन जीव घाती ।
कहथि रमानन्द सुनू विरहिनि आओत श्याम विहसती ।

(3)

अलि रे हम रघुवर संग जायब
भूखल पायब भोजन करायब निर्मल जल पियेबै ।
थाकल पायब चरण दबायब शीतल बेनिया डोलेबै ।
औंघेल पायब वन पत्र लायब तहि पर आँचर ओछेबै
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दरस को रघुवर चरण लपटेबै ।

योग

(1)

भात खेआय मन मारलन्हि हे अपन सासु हे।
जाय ने देथि अपन देश हे अपन सासु हे।
अम्मा होयती बाट देखैत करता बाबू औताह हे।
पान खेआय मति मारलन्हि हे सरहोजि अपन हे।
जाय न देथि निज देश बुझाय रखतीह हे।
कर जोरि विनती करै छी सुनू रघुनन्दन।
बाल्हत अहाँ के प्रेम अहाँ अपने छी जावन्दन।

(2)

प्रिय पाहुन मन सँ जिमि लिअ।
अपने योग बनल अछि किछु नहि सेहो मनहि विचारि लिय।
बुझब तखन हम जौं किछु माँगब और दिअ।
भावक भुखल स्वभाव अहाँ के तेँ हम सब हरसाइत छी।
भनहि विद्यापति इहो मंगल मिथिला विधि जानि लिअ।

(3)

हमर अपन करिये छथि पाहुन ताहि सँ मतलब आनका की।
अपन बल पर अपन खुशी थिक ताहि मे कानून जहाने की।
अपन बहिनि यदि फेकिये देता ताइ सँ मतलब आनका की।
साठि हजार जनमूलखिन पुरखिन तकर करै छी निन्दा की।
प्रसव काम मे दशा जे भेलनि ताहि सँ मतलब आनका की।
गट-गट गारि सुनै छथि लालन मगर मरम्मति करताकी।
स्नेहलता मुसकाथि लजाइत उचित बात मे बजता की।

उक्ति-

(1)

श्यामा बरन श्री राम हे सखि! देखैत सुख अभिराम।
आइ हमर विधि बाम हे सखि! मोहि तेजि पहु गेल आन।
पढ़ल पंडित भान हे सखि! पहुक नहि करि अपमान।
भनहि 'विद्यापति' भान हे! सुपुरुष गुणक निधान।

(2)

श्याम गोकुल तेजि गेल रे, हमर कोन दोख भेल रे।
हमरा सँ नित अपराध रे, तोहे प्रभु गुणक अगाध रे।
कत गुणकरब बखान रे, जग भरि के नहि जान रे।
भनहि 'विद्यापति' भान रे सुपुरुष गुणक खान रे।

(3)

जओं करु सुजन सिनेह रे उपला पाहुन नेह रे।
हेमकर मण्डप हेम रे चानन का कत नीम रे।
हिंगु हरदि कत बीच रे, गुनहि चिन्हल ऊँच नीच रे।
मणि काञ्च लेपटाय रे, तैओ ने तनिक गुण जाय रे।
अलि के कुसुम अनेक रे, मालति के अलि एक रे।
काक कोइलि एक कांति रे, भेम्ह भ्रमर दुई भाँति रे।
कह 'बादरि' अवधारि रे, सुपुरुष जन दुइ चारि रे।

बारहमासा-

(1)
चैत हे सखि मत्तकोकिल कुहुकि काम जगाव यो।
कठिन श्याम कठोर मानस ऋतु वसन्त विदेश यो।
वैशाख हे सखि देखि उपवन ललित कुसुम विकास यो।
देखि निज कुच कुसुम मौलल रहत चित्त न धीर यो।
जेठ हे सखि तेल चन्दन पंक लेप शरीर यो।
बिन नाथ चन्दन शीतलादिक धधकि जरत देह यो।
आषाढ़ हे सखि झमकि झमकत नीर बिजुरी जोर यो।
देखि काँपत देह थर नयन धारा नोर यो।
आयल साओन मेघ बरिसत घुमड़ि घोर समीर यो।
सुमरि यौवन उमड़ि आवत प्राणपति नहि पास यो।
भादव जलधार धड़कि ठनकत खसल चौंकि अचेत यो।
काहि कहु अब श्याम बिनु सखि जात जीवन मोर यो।
आस आसिन अन्त कय सखि बैसल कंत दुरंग यो।
शरद चन्द्रक चाँदनी देखि चित्त चंचल मोर यो।
देखि कातिक नारि एकसरि तानि शर रतिनाथ यो।
करत आकुल जीव छन-छन कठिन कन्त न बूझ यो।
लखिजात धान समान अगहन कमल सन कुच मोर यो।
झट नाथ-नाथ पुकार कय सखि पड़ल सेज अचेत यो।
पूस ओस बेहोश भय सखि खासत प्रीतम पास यो।
हम अकेलि सून पहु बिन काटब कोन विधि राति यो।
माघहे सखि जाड़ लागत जुलुम करि गेल कंत यो।
अंग अंग अनंग ज्वाला ताप तापित देह यो।
रमानन्द रहु धीर कामिनि धीर धय मन मारि यो।
आओत फागुन मिलत बालम खेलत हुनि संग फागु यो।

(2)
कहत मैना सुनू यो मुनि जा गौरी कोना रहत कुमारि यो।
गौरी जोग वर खोजि आनू चढ़ल मास बैसाख यो।
जेठ नारद फिरति चहु दिशि जेहल भंगिया भिखारि यो।
कहथि नारद सुनहु त्रिभुवनपति चलहु ब्याहन आज यो।
अखाढ़ हेमन्त घर बरियात लायल देखल सकल समाज यो।
काज राज सब छोड़ि सखिसब देखु हर बरियात यो।
साओन वर बौराह आयल बसहा पीठ असवार यो।
एहन उमत वर हेमन्त लायल फेर फाटल बेमाय यो।
भादव मैना भेलि व्याकुल धुनथि माथ कपार यो।
घटक के हम की बिगाड़ल की विधि लिखल लिलार यो।
आसिन मैना गेलि अंगना मन दुख आस अपार यो।
आब हम विष घोरि पीअब मरब जल बिच जाय यो।
कातिक शंकर भस्म तेजल कयल गंगा स्नान यो।
रगड़ि चानन अंग लेपल भेल सुन्दर रुप यो।
अगहन मैना भेलि हरसित लावथि गाइनि बजाय यो।
चलह सखि सब गीत गावह त्रिभुवनाथ जमाय यो।
पूस सखि सब छोड़ि बैसलि देखथि रुप अनूप यो।
चलह सखि सब करह मौसक देखि नैन जुड़ाय यो।
माघ शंकर भेल व्याकुल जेहथि आक धथुर यो।
एहन उमत वर हेमन्त लायल भाँग हुनक अधार यो।
फागुन शिव सँ कहथि गौरी सुनू शिव अरजी हमार यो।
एक बेरि भस्म उतारु शंकर देखत हेमन्तक समाज यो।
चैत मैना भेलि हरसित पूरल मनक अभिलाष यो।
भनहि विद्यापति ई पद गाओल मिलल त्रिभुवन नाथ यो।

(3)
अगहन सीता के विवाह, पूस कोवर तैयार।

माघ मीरक भराय देव रघुवर जी के।
फागुन फगुआ खेलायब, चैत फूल लोढ़ि लायब,
बैशाख बेनिया डोलायब रघुवर जी के।
जेठ घाम परे भारी, आषाढ़ बुन्द झरे सारी,
साओन झूलवा लगा दे, रघुवर जी के।
भादव राति अन्हार, आसिन करब सिंगार
कातिक आबि गेल मिथिला रघुवर जी के।

(4)
कातिक अयले कलकतिया जोहन बटिया।
अगहन चुड़वा कुटायब पूस दही पौरायब।
फागुन फगुआ खेलायब चैत फूल लोढ़ि लायब।
बैशाख बेनिया डोलायब जोहन बटिया।
जेठ हेठ भऽ गमायब अषाढ़ घर चल जायब।
साओन दुनु मिलि खेलब जोहन बटिया।
भादव नहि घबरायब आसिन आस लगायब।
कातिक ऐलो कलकंतिया जोहन बटिया।

छौमासा

(1)

साओन सर्व सोहाओन सखि हे फुलल बेलि चमेलि यो।
रसिक सौरभ भ्रमर भ्रमि भ्रमि करय मधुरस केलि यो।
आरे केलि करथु पहु मन दय
सखि अधिक विरह मन उपजय।
भादव घन घहराय दामिनि गरजि गरजि सुनाय यो।
बरसु घन झहर बून्द रिमिझिमि मोहि किछु नहि भाय यो।
आरे भामिनि भय घन दमसय
सखि मुरुछि खसु महिमय।
परिणाम कोन उपाय हे सखि करब कोन प्रकार यो।
मास आसिन अधिक ज्वाला विरह दुख अपार यो।
आरे कतेक सहब दुख पहु बिनु
सखि ककरो नाह बिछुड़ि जनु।
नाह बिछुड़ल मोर हे सखि होयत जीवक अन्त यो।
अरुण कातिक धामिय धायब जतय लुबधल कंत यो।
आरे कंत जोहय हम जायब
सखि जतय उदेश हम पायब।
अगहन हे सखि मारि लुबधल लबल जीवन मोर यो।
योगिनि भय हम जात जेहय जाय जुड़ल किशोर यो।
आरे हमर प्रभु जौं अहोताह
सखि कर गहि कंठ लगोताह।
पूस धीरज धारय चाहिए भमर रहल विदेश यो।
हुनि विदेशी सुखहि खेपत हमर तरुण वयस यो।
आरे विदेसहि बैसि गमओताह
सखि हमर गृह नहि अओताह।
माघ झिहरि पवन डोलय देह झाँझड़ मोर यो।
हँसथि बसन उघारि सखि सब कहथि मोहि विजेर यो।
आरे शोक वियोग मनहि मन
सखि चित्त नहि थिर रहे एको छन।

(2)

वैशाख मास तनि तलफत घाम चुबै अबिरल।
बैसि बेनिया डोलायब कोठरिया मे।
जेठ दहकत अकास, घाम सहलो न जत
पैस बैसब भीतर मन्दिरिया मे।
अषाढ़ बुन्द अपार पावस बरसे हजार
देखि हरषथ अपन कोठरिया मे।
साओन बरखा बहार, झुला करब तैयार
झुला झुलबै हम फुलबरिया मे।
भादव भरु नदी नार, नैया करब तैयार
अहाँ झिझरी खेलायब नदिया मे।
आसिन शरद बहार चाँदनी के झलकार
रास रचालेब कंचन महलिया मे।
कातिक दुतिया मनायब सबके एतहि बजायब
करब सब सुख साज कोठरिया मे।
अगहन पंचमी मनायब नवका चउरा कुटायब
प्यारे परसि खुआयब ससुररिया मे।

चौमासा

(1)
माघ मोहन नेह लगाओल अपने चलल परदेश यो।
ओहि रे परदेशिया रामा ओतहि गमाओल हम धनि बाढ़ि बयस यो।
फागुन हे सखि आम मजरल कोइली सबद घमसान यो।
कोइली शब्द सुनि हिया मोर सालय नैना सँ झहरय नोर यो।
चैत हे सखि चित्त चंचल यौवन भेल जीवकाल यो।
आन धन रहितय बेचि हम खइतौं ई धन बेचलो न जाय यो।
बैशाख हे सखि विषम ज्वाला घाम सँ भीजल शरीर यो।
रगड़ि चन्दन अंग लेपितहुँ जौं गृह रहितथि कन्त यो।

(2)
कैसे खेपब बिनु कामिनि दामिनि दमसय रे।
सखि री सुखक मास अषाढ़ आस नहि पूरल रे।
दादुर करत पुकार झिंगुर झंझकारत रे।
सखी री सावन चहुँ ओर घटा मयूर वन कुहकत रे।
भादव मे मेघ झहरत मोर मन झहरत रे।
सखी री हरि बिनु मंदिर शून गुन कत सुमिरब रे।
'सूरदास' प्रभु गावल सखी समुझाओल रे।
सखी री धीरज धरु चहु मास आसिन हरि आओत रे।

वसन्त

(1)

सरस वसन्त समय भल सजनी गे दखिन पवन बहु धीरे।
सपनहुँ रूप वचन एक भाखिय मुख सँ दूर करु चीरे।
तोहर बदन सन चान होथि नहि यदपि जतन बिधि देथि।
कय बेरि काटि बनाओल नव के तदपि तुलित नहि होथि।
लोचन तूल कमल नहि भय सक से नहि के जग जाने।
से पुनि जाय नुकायल जल मे पंकज निज अपमाने।
मदन बदन पतर नहि पावथि जस भरि तोहरहि जोहि।
भनहि विद्यापति सुनु वर यौवति उपमा सुझय न मोहि।

(2)

समय वसन्त पिया परदेश
असह सहय कत विरह कलेश
सुमरि पहु मन नहि धीर
मदन दहन तन दगध शरीर
शीतल पंकज चम्पाक माल
हृदय दहन करु विषधर ज्वाला
श्रवण दहन करु कोकिल गान
चान दहन तन अनल समान

(3)

रंगीली रंग-महल मे खेलतु आज वसन्त।
संग-सखी श्रृंगार-सजी सब सरस तरंग वसन्त। रंगीली...
सु-कर कनक पिचकारी-धारी, सोहन्त श्री सिय कन्त।
भीजत-भूषण-वसन-रसन-तन, अनुपम-छवि दर्शन्त। रंगीली...

तिरहुत-

(1)
मधुपुर गेल मनमोहन रे मोर बिहरत छाती।
गोपी सकल बिसरलनि रे जत छल अहिवाती।
सुतल छलहुँ अपन गृह रे निन्द गेलौं सपनाइ।
कर स छूटल परसमनि रे के लेल अपनाइ।
कत सुमिरब कत झाँखब रे हम मरब गरानी
आनक धन लय धनवन्ती रे कुबल भेलि रानी।

(2)
जखन चलल हरि मधुपुर रे सब सुरति निसारि।
आब कोना रहब हरि बिनु रे झाँखथि ब्रजनारि।
वन मे डोलय पिपर पात रे जल बहय सेमारि।
हम धनि डोलिय पिया बिनु रे बिनु पुरुषक नारि।
केहन कर्म विधि लिखलनि रे झाँखथि ब्रजनारी
हरि बिनु भूषण भार भेल रे पलंग ने सोहाई।

(3)
सुतल छलहुँ हम घरवा रे गरवा मोतिहार।
राति जखन भिनसरवा रे पहु आयल हमार।
कर कोशल कर कपइत रे मुखचन्द्र निहारे।
केहन अभागलि बैरिन रे भागल मोर निन्द।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि मन धरु धीर।
समय पावि तरुवर फरु रे कतबो सिंचु नीर।

बटगमनी

(1)
तरुणी वयस मोर बीतल सजनी गे पिया पिया बिसरल मोर नाम ।
कुसुम फुलीय फूल मौलल सजनी गे भ्रमरो ने लेल विश्राम ।
सिर सिन्दुर नहि भावय सजनी गे मुखहि खसय एहि ठाम ।
उठ दूत परम व्याकुल सजनी गे नयन ढरकि खसु वारि।
अधरस ओतय गमाओल सजनी गे दय गेल मौत्तिक बारि ।
युगल नयन मन व्याकुल सजनी गे थिर नहि रहय गेयान।
विद्यापति कवि गाओल सजनी गे ई थिक दुखक निदान।

(2)
चानन बुझि हम रोपल सजनी गे
भय गेल सिमरक गाछ सजनी गे।
ताहि रे गमक पिया जागल सजनी गे।
चलि भेल पिया परदेश सजनी गे।
बारह बरस पर आयल सजनी गे,
लायल कंगही सनेस सजनी गे।
ताहि कंगही लय आयल सजनी गे,
कय लेल सोलह श्रृंगार सजनी गे।
खोंइछ भरि लोढ़लहुँ चंगेरी भरि सजनी गे,
सब फूल सेजिया लगेब सजनी गे।

फगुआ

(1)
मिथिला मे राम खेलथि होरी।- मिथिला मे...
अतर गुलाब कुम कुम केशरि, रंग अबीर भरल झोरी।
सखि सब सजिधजि रघुवर के देल अबीर भरल झोरी।
होइछ वाद्य विधान विविध-विधि नाच-गान ओ झिकझोरी।
मारथि मर्म पूर्ण पिचकारी राम सकुचि जाइछ गोरी।
सुर-गण सुमन गगन सौं उझलथि, अबीर गुलाल बीच घोरी।
कूदथि बालक वृन्द मुदित मन, मिला-मिला निज-निज जोरी।
धौ फगुआ के रूप मिथिलापुर, घर-घर मचि रहल होरी।
'हरेकृष्ण' शोभा लखि सकुचित, शेष-शारदा-शत् जोरी।

(2)
गलिअन बिच धूम मचायो री, गलियन...
ग्वालवाल संग लिये कन्हैया नित भोरे उठि आयो री।
हाथ अबीर गुलाल पिचकारी सिर डारो री।
वंशी वीणा झाल बजओ देत गारी गायो री।-गलियन......

(3)
गोरी संग कृष्ण खेलय होरी
ग्वाल वाल संग कृष्ण कन्हैया
सुन्दर रंग भरी झोरी।
बाजा आवत झाल मृदंग सब
सब जन आवत रस बोरी।
गिरिधर दास गाओल बाल संग
युग युग जीबओ यह जोरी। गोरी संग...

(4)
परदेसिया ले अंगना निपावे गोरिया। परदेसिया...
जब परदेसिया नगर बीच आयल
    खुटे खुट अंगना निपावे गोरिया। परदेसिया...
जब परदेसिया आंगन बीच आयल
    रचि रचि केसिया बन्हावे गोरिया। परदेसिया...
जब परदेसिया घर बीच आयल
    झाड़ि झाड़ि पलंग ओछावे गोरिया। परदेसिया...

(5)
परदेसिया के नारि सदा रे दुखिया।
चारिम मास फागुन अब बीतल
कहियो ने आयल पहु पतिया।- परदेसिया....
पाचम मास चैत जब बीतल
अपनो ने सूनल हुनि बतिया।- परदेसिया...

(6)
होरी खेलत श्री रघुवर रसिया।
धूम मचावत, डंफ बजावत घाट-बाट सब रोक लिया।
श्री रघुवंशी छैल छबीले, श्री मिथिलेश दुलारी सिया।
ललकारत दोऊ ओर परस्पर जीत लिया होरी जीत लिया
अबीर उड़ावत रंग बरसावत जनक नगर के गलि गलिया।
'प्रेमनिधि' अबला प्रबला भऽ, उमड़ि चली हे रंगरलिया।

(7)
होरी मे लाज न करु गोरी।
प्रेम ब्रजवासी तु गोरी भली बीनहे यह जोड़ी।
जो इससे सीधे नहि खेलहुँ मार मार कर बरजोरी।

सुरदास निकले सब वन मे लिये जाय वन मे जोड़ी ।

चैतावर-

(1)

कृष्ण तेजल मधुबनमा हो रामा कौन कारनमा

कृष्ण तेजल मधुबनमा ।

यमुना तट पर बंशी वट पर सेले नहि लागत मोहनमा

कौतुक हास रास वृन्दावन सेहो सब भेल सपनमा

हो रामा कृष्ण तेजल मधुबनमा ।

जौं हम जनितौं कृष्ण नहि औता रहितौ अपन भवनमा।

सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को हरि मुख भेल सपनमा।

हो रामा कृष्ण तेजल मधुबनमा ।

(2)

चैत रे महिनमा पिया बिनु आबे नहि निंदिया, हो रामा...

पिया परदेश गेल सुधि बुधि हरि लेल

भुलि गेल घर के सुरतिया- हो रामा पिया बिनु.....

जब सुधि आबे पिया तोहरो सुरतिया

कुहुकि उठय मोर छतिया- हो रामा पिया...

केहन कठोर भेल पिया के करेजवा

एको नहि लिख भेजय पतिया- हो रामा

घर जब अइहे। पिया कोरा ले बैसिहें

नखरा लगैहें आधी रतिया- हो रामा...

कहत महानन्द सुनु हे सहेलिया

ऐसे मे बितैं हें सारी रतिया- हे रामा....

(3)

डिम डिम डमरु बजावै हो रामा, शिव रंगरसिया।

अपने सदाशिव पूजा पर बैसता

गौरी सँ टहल करावै हो रामा...

अपने सदाशि भाँग उपजावे

गौरी सँ भाँग पिसावै, हो रामा....

अपने सदाशिव बसहा चरावै

गौरी सँ डोरी धरावै, हो रामा....

अपने सदाशिव माँगि-माँगि आनथि,

गौरी स धान कुटावै, हो रामा....

(4)

रुसल पियवा मना दे कोइलिया

तेरी मीठी बोलिया।

सगर रैनि हम कतेक मनाओल

ओ नहि मानल मोर बतिया।

केओ नहि हित-बंधु ककरा जगायब

के पिया देत मनैया।

आमक गाछ पर तोहें जे कुहुकब

हम कुहुकब दिन रतिया- हो रामा...

सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को

कओन हरल हुनि मतिया। हो रामा तेरी मीठी बोलिया

(5)

कौन कयल योग टोनमा, हो रामा सब गेल बनमा

राम लखन सिय बनहि सिधारल दशरथ तेजल परनमा, हो रामा..

मातु कौशिल्या रोदना पसारल सुन भेल नगर भवनमा, हो रामा..

तुलसदास प्रभु तुम्हरे दरस को, धन इहो कोप भवनमा, हो रामा..

झूला

(1)
यमुना तीरे कदमक डारी झूला रेशम के डोर गे।
शोभा देखि भेल चितचोरी ज्ञान हरन भेल मोर गे।
एक दिश राधा एक दिश कान्हा दोउ कर झिकझोर गे।
राधा वदनमा पर शोभे माला निरखत नंद किशोर गे।
नभ घेरि अयले कारी बदरिया भेले गगन मे शोर गे।
विरहिन के चित्त चंचल भेलइक नयना झहरे नोर गे।
राधाकृष्ण युगल अति सुन्दर एक श्यामल एक गोर गे।

(2)
आयल सावनक मास, मन मे बढ़ल हुलास
मनमा लागि गेले वृन्दावन नगरिया मे।
झुला परम अनमोल, लागत रेशमक डोर
झूलत नन्द किशोर इजोरिया मे।
सखियन संग राधा रानी से छवि कोना के बखानी
सुन्दर बाजत बाजे झुनका पैजनिया मे।
झूलवै मिलिकय सखी सहेली, सुमुखी राधा अलबेली
झूलत राधे श्याम यमुना किनरिया मे।
एक सखि लेने कर मे माला, कहाँ गेल नन्दलाला
सूरदास पुछथिन्ह छोड़ि डगरिया मे।

(3)
झूला लगे कदम की डाली,
झूले कृष्ण मुरारी ना।
कौने काठ के बनल हिंडोला
कौन वस्तु के डोरी। झूला..
राधा झूलय कृष्ण झुलावय बारी-बारी ना। झूला..

छठि

(1)

अंगना मे पोखरी खुनायल
छठि मइया ओती आइ।
दुअरा पर तमुआ तनायल
छठि मइया ओती आइ।
अँचरा सँ गलिया बहारब
तेपर पियरी ओढ़ायब
छठि मइया ओती आइ।

(2)

डोमिन बेटी सुप नेने ठाढ़ छै
उगी हो सुरुज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजा केर बेर
मालिन बेटी फूल नेने ठाढ़ छै
उगी हो सुरुज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजा केर बेर
केओ ने छै लेसबैया परमेसरी मैया
सोना के दियरा मइया, पाट-सुती बाती हे
अबला नारी लेसबैया परमेसरी मइया
निर्धन कोढ़ी बाटे-घाटे ठाढ़ छै
उगी हो सुरुज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजा केर बेर
पान सुपारी पकवान नेने ठाढ़ छै
उगी हो सुरुज देव।

(3)

हमरो पर होइयौ सहाय, हे छठि मइया
हमरो पर होइयौ सहाय।
चारि पहर राति जल-थल सेवलौं
सेवलौं छठि गोसाउनि हे छठि मइया।
हमरो पर होइयौ सहाय।
अपना ले मंगलौं अन्न-धन लछमी
जुग जुग मांगल अहिबात, हे छठि मइया
हमरो पर होइयौ सहाय।
घोड़ा चढ़ै लेल बेटा एक मंगलौं
हमरो पर होइयौ सहाय।
बचन बिलहै लेल बेटी एक माँगल
माँगल पण्डित जमाय, हे छठि मइया
हमरो पर होइयौ सहाय।

(4)

केरवा जे फरल छै घौद सँ ओइ पर सुगा मड़राय।
मारबौ रे सुगवा धनुष सँ, सुगा खसत मुरछाय।
सुगनी जे कानय वियोग सँ, आदित होउ ने सहाय।
काँचहि बाँस केर बहंगिया, ओइ मे रेशमक डोर
भरिया जे फललाँ भरिया, भार नेने जाय छै
बाटहि पूछै बटोहिया से, ई भार किनकर जाई।
आन्हर होइबे रे बटोहिया ई भार छठि माई के जाइ।
ई भार दीनानाथ के जाय।

समदाउन

(1)

बड़ रे जतन सँ सिया जी के पोसल
सेहो रघुवंशी नेने जाय।
कौने रंग डोलिया कौने रंग ओहरिया
लागि गेल बतीसो कहार।
लऽ कऽ निकसल बिजुवन सखिया
ओहि बन केओ ने हमार।
केयो जे कानय राजमहल मे
केओ कानय दरबार।
केओ जे कानय मिथिला नगर मे
जोड़ि सँ बिजोड़ि केने जाय।
आजु धीया कोना अमा बिनु रहती
छन-छन उठति चेहाय।

(2)

भेल विवाह चलल शिवशंकर
गौरी सहित कैलाश।
बसहा पीठ शिव डोलिया फनाओल
बाघ छाल पड़ल ओहार।
बड़ रे जतन सँ गौरी के पोसल
घृत मधु दूध पीआय।
सोनाक मुरुति सन गौरी हमर छथि
वर भेल तपसि भिखारि।
हमर गौरी कोना तपोवन जेतीह
झाँखथि राजदुलारि।

(3)

सुग्गा जौं पोसितहुँ भजन सुनबिते
धीया पोसि किछु नहि भेल।
घीक घील जकाँ पोसलौं हे धीया
बेटा जेँका कयल दुलार।
सेहो धीया मोर सासुर जेतीह
सुन भवन केने जाय।
ओलतिक छाहरि जकाँ पोसलौं हे धीया
मधुर जेँका राखल जोगाय।
सेहो धीया मोर सासुर जेतीह
सुन भवन केने जाय।

(4)

बारह बरस केर छल उमेरिया तेरहम बरस ससुरारि।
कौने निरमोहिया दिनमा पठाओल कौने निरमोही मानि लेल।
कौने निरमोहिया डोलिया पठौलक कौने निरमोही नेने जाय।
ससुर निरमोहिया दिनमा पठौलक बाबा निरमोही मानि लेल।
भैया निरमोहिया डोली पठौलकइ स्वामी निरमोही नेने जाय।
कथी देखि धीरज धरबह हे सखिया कथी देखि रहब लोभाय।

(5)

जखन महादेव निज घर चललाह गौरी सहित कैलाश।
बसहा चढ़ल शिव डोलिया पठौलनि बाघछाल कयल ओहार।
घर सँ बाहर भेला हेमन्त ऋषि भय गेल बाप पीठी ठाढ़।
घर सँ बाहर भेलि माय मनाइनि सुसुकि बहाबथि नोर।
सब दिन खाथि गौरी माखन मिसरी सक्कर करथि अहार।

मे गौरी कोना धतुर भाँग खवती आन की स्वत आधार।

पराती-

(1)

उठि भोरे कहू गंगा-गंगा।
 उठि भोरे कहू गंगा-गंगा।
छल एक पापी महाबली
 जाय मगह मरि गेल।
ओकरा तनके कौओ कुकुर ने खाय,
 गिद्ध गीदर देखि उराय। उठि...
गलि गेल माँस हाड़ भेल बाहर
 रोम-रोम भेल बिकलाई।
कणिका एक उड़ि पद पंकज,
 सुर विमान लय धाई। उठि...
पंछी एक उड़ल गंगा मे
 ऊपर पाँखि फहराई।
देखू गंगाजी क महिमा जे
 ओ कोना तरि जाई। उठि...
गेल बैकुण्ठ मुदित मन देखू,
 आरति सुर उतराई।
भोलाजी गंगाक महिमा,
 कहइत अधिक लजाई।

(2)

कोन गति होयत मोर हो प्रभु कोन गति होयत मोर।
जनम जनम हम पाप बटोरल कहिओ न भजलहुँ तोर।
बेरि बेरि अँखिया कमल मुख हेरलहुँ सुधि नहि तोर एको बेर।
अबहु सुमति गति दिय त्रिभुवन पति शरण रहब हम तोर।
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दरस के दुख संकट हरु मोर।

(3)

रथ पर निरखत जात जटाई- रथ पर निरखत जत।
रथ के उपर बैठ वैदेही नाजत निठुराई। रथ पर...
है कोइ वीर राम के दलमे रथ के ले बिलमाई।
कोन वंश के सुत रघुराई कौन हरने आई।- रथ पर ...
सूर्यवंशक राजा नृप दशरथ तनिके सुत रघुराई।
तनिके प्रिया नाम जानकी निशचर हरने जाइ।- रथ पर...
करुण वचन जब सुनेउ जटाई रथ चढ़ि कयल लड़ाई।
अग्निवाण मारल सो धरती गिरल मुरछाई - रथपर
मन सँ आशिष देल माता जानकी प्राण रहे घट छाई।
एहि बाटे आओता रघुवर ताकय सब बात कहब बुझाई। रथ पर...

(4)

जागहु राम कृष्ण दोउ मूरति दशरथ नन्द दुलारे।
उदय होय उदयाचल आवत जोति पलंग पसारि।
जय जयकार करत सब आयो सुर नर मुनि तुअ दुआरे। जा....
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल मुरली धनुष सम्हारि।
कब देखिहौं नयनन दोउ मुरति सन्तन केर रखबारे।- जा....
पायो दरस परस पद पंकज पापी पुरुष निवारे।
रहे एक आस दास तुलसी के तीन लोक के प्यारे।
सीता पति राधा वर जोरी लेइय सुधि न हमारे।- जागहु....

(5)

जुनि करु राम वियोग हे जानी। जुनि..
सुतल छलहुँ सपन एक देखल,
देखल अवधक लोक हे जानी।- जुनि....

दुइ पुरुष पथ अबइत देखल,
एक श्यामल एक गोर हे जानी।- जुनि....
कंचन गढ़ हम जरइत देखल,
लंका मे उठल किलोल हे जानी।- जुनि.....

सेतु बान्ह हम बान्हइत देखल,
समुद्र मे उठल हिलोर हे जानी। - जुनि....

नचारी-

(1)
रहबौ हम तोहरे नगरिया हो भंगिया,
                रहबौ हम तोहरे नगरिया।
झारी मझारी मे कुटिया बनायब,
सब दिन बसायब उगरिया हो भंगिया।
भांगो धथुर पीसि तोहरा पियायब,
                भोर साँझ दुपहरिया, हो भंगिया....।
भांगक बाड़ी मे बसहा चराएब,
                जीवन भरि करबौ चकरिया, हो भंगिया...
धथुर के फूल बेलपतिया चढ़एब
    चानन चढ़ायब केशरिया, हो भंगिया....
कतबो हरेला सँ हम नहि हटबह,
कहियो ने छोड़बह दुअरिया, हो भंगिया...।
सब दिन नवीने नचारी सुनाकय
    अपन बितायब उमरिया, हो भंगिया...
नेको अनेको जनम मे बसबिहह,
                अपन धरक पछुअरिया, हो भंगिया...
'मधुकर' सतत बाट हम तोरे ताकब
                कहियो त फेरबऽ नजरिया, हो भंगिया...।

(2)
आइ मयना के अंगना सोहाग बहिना।
जेना जूटल छै शोभा के खान बहिना।
गौरी ओ शंकर युगल रुप मोहन।
कए के सकै अछि बखान बहिना।
घर-घर नगर ओ डगर पर विराजय।
तानल वसन्त वितान जहिना।
छवि के छटा पर कपिक घन घटा अछि।
तै पर स्वर लय के जुटान बहिना।
मोदो प्रमोदो प्रमोदो पाबि उमड़ल।
उदधि देखि पूनम के चान जहिना।
शिवराति शिवमय करय विश्व भरि कैं।
'मधुकर' सब फागुन के मास एहिना।

(3)
गौरी तोर अंगना बड़ अजगुत देखल तोर अंगना।
एक दिस बाघ सिंह करै हुलना
                        दोसर बड़द छैन सेहो बउना।
पैंच उधार लय गेलहुँ अंगना
                        सम्पत्ति के मध्य देखल भाँग घोटना।
खेती ने पथारी सिव के गुजर कोना
                        मंगनी के आस छनि वरिसो दिना।
कातिक गणपति दुइ जन बालक
                        एक चढ़ै मोर एक मूस लदना।
भनहि विद्यापति सुनु उदना
                        दारिद्र हरण करु धैल शरणा। गौरा...

(4)
नारद बहुत बुझा हम कहलहुँ
                गौरी लय एहन वर अनलहुँ यो।
हमरो गौरी छथि बारह बरख केर
                बुढ़वा वर लय अयलहुँ यो।

नारद बड़ अजगुत अहाँ कयलहुँ।
गौरी लय एहन बर लयलहुँ यौ।
तीनि भुवन बर कतहुँ न भेटल
तेँ घर घूरि फिरि अनितहुँ यौ।
बेटि गौरी छथि अल्प वयस केर
कनिको नहि बिचारलहुँ यौ।
भनहि विद्यापति सुनिय मनाइनि
त्रिभुवन पति लय अयलहुँ यौ।

(5)
जोगि एक ठाढ़ अंगनमा मे।
भिखियो ने लिअय बाटो नहि छोड़य गौरी कोना जयती
अंगनमा मे।
देह अछि सह सह विषधर शत-शत भूत-प्रेत छनि संगवा मे।
बसहा चढ़ल शिव डमरु बजाबथि जटा बीच गंग तरंगमा मे
जोगि एक ठाढ़ अंगनमा मे।

समदाउन गीत-

(1)
डाला लय बहार भेली बहिनो से फल्लाँ बहिनो
फल्लाँ भैया लेल डाला छीनि, सुनु राम सजनी....
समुआ बैसल तोहें बाबा बडैता
तोर बेटा लेल डाला छीनि- सुनु राम सजनी...
कथी केर आहे बेटी डलवा तोहर छौ
कथी बान्हल चारु कोन- सुनु राम सजनी...
काँचहि जे बाँस केर डलवा गे बाबा
बेली-चमेली चारु कोन- सुनु राम सजनी ...
जौं तोरा आहे बहिनो डलवा जे दय देब
हमरा के की देब दान- सुनु राम सजनी....
चढ़बाक घोड़ा देब पढ़बाक पोथी देब
छोटकी ननदिया देब दान- सुनु...

(2)
चानन बिरिछ तर भेलि बहिनो
से फल्लाँ बहिनो-
ताकथि बहिनो भाइ केर बटिया
एहि बाटे औता भैया, से फल्लाँ भैया ..
देखि लेथिन भरि अँखिया
पैर पकड़ि जनु कानू हे बहिनो, से फल्लाँ बहिनो
फाटत मोर छतिया।

(3)
हमर भैया कोना आबे
हाथी चढ़ल भैया हँसैत आवे
पान खाय मुह रंगैत आबे
रुमाल लय मुह पोछैत आबे।
दरपन लय मुह देखैत आबे
चुगिला कोना के आवे
गदहा चढ़ल हिहिआइत आबे
कोइला सँ मुह रंगैत आबे
गुदरी सँ मुह पोछैत आबे।

(4)
गे माइ कौने भइया जयता असाम- पटना
कोने भैया जयता मुंगेर।
कोने भइया जेता दिल्ली कलकत्ता
कौने भइया जयता रंगून।
कौने भइया लौता आलरि-झालरि
कौने भइया लौता पटोर
कौने भइया लौता झिलमिल केचुआ।
कौन भइया लौत कामी सिन्दुर
कौने बहिना पहिरथि आलरि- झालरि
कौने बहिनी पहिरु पटोर।
कौने बहिना पहिरथि झिलमिल केचुआ
कौने भौजी कामि सिन्दुर।

युगे-युगे जीबथु इहो सब भैया, भौजी के बाढ़ु अहिवात।

(5)

नदिया के तीरे तीरे फल्लाँ भैया खेलथि शिकार।
कहि पठोलनि भाइ फल्लाँ बहिनो के समाद
भैया आओताह पाहुन हे।
कोठी नहि मोरा अरबा चाउर बसनो नहि बीड़ा पान हे।
कौन विधि राखब माइ हे फल्लाँ भाइक मान हे।
हाट बजार सँ चाउर मंगायब, तमोली सँ बीड़ा पान हे।
पटना शहर से धोतिया मंगायब, राखब भैया के मान हे।

(6)

गाम के पछिम ठुठि पाकड़ि रे ना
ना रे ताहि पर बाबा बसेरा लेल ना।
खेलिते-धुपैते गेली फल्लाँ बहिनी ना।
एक कोस गेली बहिनी दू कोस ना।
तेसर कोस बहिनी हेराय गेली ना।
तकैत तकैत गेलथिन फल्लाँ भैया ना।
एक वन तकलनि भैया दुइ वन ना।
कतहुँ ना भेटय बहिनिया मोर ना।
देखरि बैसल भेली खुश भेली ना।
ना रे भेल ननदी हेराय गेली ना।

(7)

गाम के अधिकारी भैया हे
भैया हाथ दस पोखरी खुना दिय।
चम्पा फूल लगा दिय हे।
फुलवा लोढ़ैत बहिनी आयल हे।
घामि गेल सिर के सिन्दुर नयन भरु काजर हे।
छत्ता लेने आवथि भैया से फल्लाँ भैया हे।
बैसह बहिनी एहि छाह आशीष देहु हे।
युगे-युगे जीबथु फल्लाँ भैया तोरो अहिवात बढ़ू हे।

राग संझी

ललित रागमे-

मेघ समय पर जलदान करे।
पृथ्वी धन-धान्य सँ भरल रहे।
पिसुन पाबि जनु नृपतिक काने।
गुन बुझि भूप करथु सनमाने।
चिरे जिबथु हिन्दुपति देओ।
गुन कीरथि गाबहि सब केओ।

राजविजय राग मे-

जय जय पारिजात तरुराज।
            पाओल पुरुब पुन दरसन आज।
सरगक भूषन गुनक निवास।
            पुरुषक तोहें परिपूरह आस।
सेवक सब तुअ दानव देवा।
            मानव जानव की तुअ सेवा।
सुरपति निअ कर करथि किआरी।
            सची देथि सुरसरि जल ढारी।
सुमति उमापति भन परमाने।
            माहेसरि देइ हिन्दुपति जाने।

आसावरी राग मे-

जयति हरिक समाजे। पाओल नयन सुख आजे।
                                        कि आरे-ध्रुवपद।
जेगहुँ न जानिअ जाही। दिठी भरि देखब ताही।
ब्रह्म शिव सेव जाही। काहि भजब तेजि ताही।
मनहि भगति लेब माँगी। समय परमपद लागी।
हिन्दुमति जिउ जाने। महेसरि देइ बिरमाने।
    सुमति उमापति भाने। पुनमति भजु भामाने।

वसन्त रागमे

अगनित किंशुक चारु चम्पक वकुल बकुल फुलियाँ।
पुनु कतहुँ पाटलि पटलि नीकि नेवारि माधवि मल्लियाँ।
कर जोरि रुकुमिनि कृष्ण संग वसन्त रंग निहार हीं।
रितु रभस सिसिर समापि रसमय रमथि संग विहार हीं।
अति मञ्जु वञ्जुल पुञ्ज मिञ्जल चारु चूअ विराजहीं।
निज मधुहिं मातलि पल्लवच्छवि लोहितच्छवि छाजहीं।
पुनु केलि कलकल कतहु आकुल कोकिल कुल कूजहीं।
जनु तीनि जग जिति मदननृपमनि विजयराज सुराजहीं।
नव मधुर मधु रसु मुग्ध मधुकर निकर निक रस भावहीं।
जनि मानिनि जन मान भञ्जन मदन गुरुगुन गावहीं।

बराजीराग मे-

अब तरु अवनी तेजि अकास।

न थिक दिवाकर न थिक हुतास।
धोती धवल तिलक उपवीत।
ब्रह्म तेज अति अधिक उदीत।
वैनव दण्ड वेद कर सोभ।
आवथि नारद दरसन लोभ।
परम जुगुत तिनि जातक हीत।
ब्रह्मासुत मोर सम्भुक मीत
सुमति उमापति भन परमान।
जामाता देवि हिन्दुपति जान।

पंचम राग मे-

सखि हे रभस रस चलु फुलवारी।
    तहँ मिलत मोहि मदनमुरारी।
किनक मुकुट महँ मनि भल भासा।
    मेरु सिखर जनि दिनमनि वासा।
सुन्दर नयन वदन सानन्दा।
    उगल जुगल कुवलय लय चन्दा।
वनमाला उर उपर उदारा।
    अन्जनगिरि जनि सुरसरि धारा।
पिअर वसन तन भूखन मनी।
    जनि नव घन उगल दामिनि।
जीवन धन मन सरबस देवा।
    से लय करब हरि चरनक सेवा।
सुमति उमापति मन परमाने।
    जगमाता देइ हिन्दुपति जाने।

नटराग मे-

कि कहब माधव तनिक विसेसे।
    अपनहु तनु धनि पाव कलेसे।
अवनुक आनन आरसि हेरि।
    चानक भरम कोप कतबेरी।
भरमहु निअ कर उर सर आनी।
    परस तरस सरसीरुह जानी।
चिकुर निकर निअ नयन निहारी।
    जलधर जल जनि हिअ हारी।
अपन वचन पिकरव अनुमाने।
    हरि हरि तेहु परितेजय पराने।
माधव अबहु करिअ समधाने।
    सुपुरुष निठुर ने रहय निदाने।
सुमति उमापति भन परमाने।
    माहेसरि देइ हिन्दुपति जाने।

मालव राग मे

हरि सउँ प्रेम आस कय लाओल।
    पाओल परिभव ठामे।
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ
    आतप भेल परिनामे।
सखिहे मन जनु करिय मलाने
    अपन करम फल हम उपभोगव

तोहें किअ तेजह पराने । - ध्रुवम्
पुरुष पिरिति रिति हुनि जौं बिसरल
तइओ न हुनकर दोसे।
कतन जतन धरि जौं परिपालिअ
साप न मानय पोसे ।
कबहु नेह पुनु नहि परगासिअ
केवल फल अपमाने ।
बेरि सहस दस अमिअ भिजाबिअ
कोमल न होअ पखाने । - ध्रुवम्
गुरु उमापति पहु देव दरसन
मान होएब अबसाने ।
सकल नृपतिपति हिन्दुपति जिउ
महरानि बिरमाने। ध्रुवम् ।

केदारराग मे-

मानिनि मानह जौं मोर दोसे ।
सौंति करह बरु न करह रोसे ।
भौंह कमान बिलोकन बाने ।
बेधह बिधुमुखि कय समधाने ।
पीन पयोधर गिरिवर साधी ।
बहु मास धनि धरु मोहि बाँधी ।
की परिनति भय परसनि होली ।
भूखन चरनकमल देह मोली ।
सुमति उमापति मन परमाने ।
जामाता देइ हिन्दुपति जाने ।

मल्लार राग मे

माधव करह हमर समधाने।
देह मोहि पारिजात तरु आने ।
एहिखन तोरित करिअ पयाने ।
नहि तइँ हमर अबस अवसाने ।
एहि परि हमर पुरत अभिमाने ।
रुचत हरी नहि होअ अपमाने ।
सुमति उमापति भन परमाने ।
पटमहिखी देह हिन्दुपति जने ।

बिभास राग मे

सहस पूर्णससि रहओ गगन बसि
निसिबासर देओ नन्दा।
भरि बरिसओ बिस बहओ दहओ दिस
मलय समीरन मन्दा ।
साजनि आब जिबन किअ काजे
पहु मोहि हिन करु अपजस जग भरु
सहय न पारिअ लाजे। ध्रुवम्
कोकिल अलिकुल कलरब आकुल
करओ दहओ दुहु काने ।
सिसिर सुरभि जत देह दहओ तत
हनओ मदन पचबाने ।
सुकवि उमापति हरि होए परसन
मान होएत समधाने ।

सकल नृपति पति हिन्दुपति जिउ
महेसरि देइ विरमाने । ध्रुवम्

……………………………

चर्मकार टोलक गीत

लुकेसरी अँगना चानन घन गछिया
तहि तर कोइली घऽमचान हे
कटबै चनन गाछ, बेढ़बै अँगनमा
छुटि जेतऽ कोइली घऽमचान हे
कान्ऽ लागली खीजऽ लागल, बोन के कोइलिया
टूटि गेलऽ कोइली घऽमचान हे
जानू कानू जानू की, जोबोन के कोइलिया
अहि जेतऽ कोइली घऽमचान हे
जहि बोन जेबऽ कोइली
रहि जेत तऽ निशनमा
जनू झरू नयना से लोर हे
सोने से मेढ़ायेब कोइली तोरो दुनू पँखिया
रूपे से मेरायेब दुनू ठोर हे
जाहे बोन जेबऽ कोइली रुनझुनु बालम
रहि जेतऽ रक्तमाला के निशान हे

२

कए कोस माँ मन्दिलबा
कए कोस लुकेसरी मन्दिलबा
कए कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कए कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
दुइ कोस मन्दिलबा
चारि कोस लुकेसरी मन्दिलबा
पाँचे कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
पाँचे कोस पड़ल दोहाइ

कोन फूल माँ मन्दिलबा
कोन फूल बन्दी मन्दिलबा
कोन फूल पर पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कोन फूल पर पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
ऐली फूल माँ मन्दिलबा
बेली फूल लुकेसरी मन्दिलबा
गेन्दे फूल पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
गेन्दे फूल पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
……..

३

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल,

मालिन बेटी सूतल फुलवारि हे
उठू मालिन राखू गिरिमिल हार हे
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल,
मालिन बेटी सूतल फुलवारि हे
उठू मालिन राखू गिरिमिल हार हे

कोन फूल ओढ़ब लुकेसरि के
कोन फूल पहिरन
कोन फूल बान्धिके सिंगार हे

उठू मालिन राखू गिरिमिल हार हे
बेली फूल ओढ़ब बन्दी
चमेली फूल पहिरन
अरहुल फूल लुकेसरि के सिंगार हे
उठू मालिन गाँथू गिरिमिल हार हे
उठू मालिन गाँथू गिरिमिल हार हे

४

बारहे बरिस जब बीतल तेरहम चढ़ि गेल हे
बारहे बरिस जब बीतल तेरह चहरि गेल हे
ललना सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनियाँ घरसे निकालब हे
ललना सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनियाँ घरसे निकालब हे

अंगना जे बाहर तोहि छलखिन रिनियाँ गे
ललना गे आनि दियौ आक धथूर फर पीसि हम पीयब रे
ललना रे आनी दियौ आक धथूर फर पीसि हम पीयब रे
बहर से आओल बालुम पलंग चढ़ि बैसल रे
बहर से आओल बालुम पलंग चढ़ि बैसल रे
ललना रे कहि दियौ दिल केर बात की तब माहुर पीयब रे
ललना रे कहि दियौ दिल केर बात की तब माहुर पीयब रे

बारह हे बरिस जब बीतल तेरह चहरि गेल रे
ललना रे सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनिया घरसे निकालब रे
सासु मोरा मारथिन अनूप धय नन्दो ठुनुक धय रे
सासु मोरा मारथि अनूप धय ननदो ठुनुक धय रे
ललना रे गोटनो खुशी घर जाओल सभ धन हमरे हेतै हे
ललना रे गोटनऽ खुशी घर जाओल सभ धन हमरे हेतै हे

चुप रहू, चुप रहू धनी की तोहीँ महधनी छिअ हे
चुप रहू, चुप रहू धनी की तोहीँ महधनी छिअ हे
धनी हे करबै हे तुलसी के जाग, की धन सभ लुटा देबऽ हे
ललना हे करबै मे पोखरि के जाग, की सभ धन लुटाएब हे

५

लाल परी हे गुलाब परी

लाल परी हे गुलाब परी
हे गगनपर नाचत इन्द्र परी
हे गुलाबपर नाचत इन्द्र परी

रक्तमाला दुआरपर निरधन खड़ी
हे रकतमाला दुआरपर निरधन खड़ी
माँ हे निरधनकेँ धन यै देने परी
माँ हे निरधनकेँ धन जे देने परी

लाल परी हे गुलाब परी
माँ हे रक्तमाला दुआरपर अन्धरा खड़ी
माँ हे अन्धराकेँ नयन दियौ जलदी
माँ हे अन्धराकेँ नयन दियौ जलदी

६

घर पछुवरबामे अरहुल फूल गछिया हे
फरे-फूले लुबुधल गाछ हे
उतरे राजसए सुगा एक आओल
बैसल सूगा अरहुल फूल गाछ हे
फरबो ने खाइ छऽ सुगबा, फुलहो ने खाइ छऽ हे
डाढ़ि-पाति केलक कचून हे
फुलबो ने खाइ छऽ सुगबा, फरहु ने खाइ छऽ हे
डाढ़ि-पाति केलक कचून हे
घर पछुवरबामे बसै सर नढ़िआ हे
बैसल सूगा दिअ ने बझाइ हे

एकसर जोड़ल सोनरिया
दुइसर जोड़ल हे
तेसर सर सूगा उड़ि जाइ हे
सुगबो ने छिऐ भगतिया
तितिरो ने छिऐ
येहो छिऐ गोरैय्या के बाहान हे

गोसाइ गीत (मल्लाह)

कमला

कमला-कमला सुनै छलौं कमला बड़ दूर हेऽऽ

गहबर पहसैत कमला भए गेल कसहूर हे,

अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे माइ बिनु लागै य सुनऽ हे।

कोयल-कोयला सनै छलौं कोयला बड़ी दूर हेऽऽ

गोबर पहसैते कोयला भऽ गेल मसहूर हे

अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे

जे भातिज बिनु लागै य सुन हे

कोयला-कोयला.....।

मातैर-मातैर सुनै छलौं मातैर बड़ी दूर हे

अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे स्वमी बिनु लागै य सुन हे

मातैर-मातैर..... ।

ससिया-ससिया सुनै छलौं, ससिया बड़ी दूर हे

अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे बालक बिनु लागै य सुन हे

कमला-कमला......।

2

कमला मैया बसत बड़ी दूर

गमक लागे गेंदा फूल

कथी डालि लोरहब बेली-चमेली

कथी डालि लोरहब अरहूल हे

गमक लागे गेंदा फूल कमला मैया.....

किनका चढ़ाएब बेली-चमेली

किनका चढ़ाएब अरहूल

गमक लागे गेंदा फूल-2

कमला चढ़ाएब बेली-चमेली

कोयला चढ़ाएब अरहूल,

गमक लागे गेंदा फूल हे

कमला...किनका सँ मांगब अन-धन सोनमा

किनकासँ मांगब सोहाग गे सोहाग गे

मलहिन्याँ देखै मे फूल वर लाल हे

ससिया सँ मांगब अन-धन सोनमा

मातैर सँ मांगब सोहाग गे

मलहिन्याँ देखै मे फूल वर लाल....।

3

कटबै मे सोना सुतरिया बिन्बै झुमरि जाल हे

जाल फरि-फरि कमला एलखिन

सन्‍-झुन लागै गोहबरिया

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हेऽऽ

कटबै......

जाल फरि-फरि गांगो एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक,

सुन लगै गोहबरिया हे-2

कटबै.........

जाल फरि-फरि मातैर एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै.....

बिन्हबै झुमरि जाल हे।

4

जग मग जग मग ज्योति जलै मंदिरमे

देखियौ कमला के श्रृंगर कमला के

लट मे तेल सोभे हुनका सेंदुर के

अधिकार जग मग जलै मंदिर मे

देखियौ मातैर के नाक मे नथिया सोभे

हुन्का झुमका के अधिकार

जग मग जलै मंदिर मे ससिया के मांग मे

टिका सोभे हुनका होसली के अधिकार

जग मग जग मग ज्योति जलै मंदिर मे

कमला श्रृंगार..... ।

गोसाइ (डोमीन)

करिया कुखा हे काली माय लेलनि जोरि आइ हे

मैया एक कोस गेलऽ हे काली माय दुइ कोस गेलऽ हे

काली माइ तेसर कोस उठल शिकार हे

हकन कनै छै काली बन के मयुर हे

बकसि दियौ सीर के सिन्दुर हे

सारी रात नटुआ नचाबऽ हे

होइत भोर मे उसारब हे......।

2

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँ

हमरा पानि सेब देवता अरैध के लबिहेँ गै

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँऽ?

हमरा गौरध्या सन अरैध के लबिहेँ गै

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँ

हमरा गहील सन देवता अरैध के लबिहेँ गै.....।

मूड़न गीत

गोसाउनि नेतक गीत

बट्टा भरि चानन रगड़ल पाने पत्र लिखल हे।

ताहि पान नेतब गोसाउनि जे नित्त पूजि थिकि हे।

ताहि पान नेतब पितर लोक जे निज आशिष देथि हे

ताहि पान नेतब ऐहब लोक जाहि स मंगल हएत हे।

मूड़न बेरक-

कौने बाबा दिनमा गुनाय जग ठान्ल हे।

कौने बाबी पड़िछथि केश कि होड़िया के मूड़न हे।

लाल पीयर चीर पहिरब केश परीछब हे

बाँस पुरैन लेल खोंइछ कि होड़िलाक मूड़न हे

देबउ हजमा बड़ इनाम कि होड़िलाक मूड़न हे।

शुभ-शुभ काट हजमा केश कि होड़िलाक मूड़न हे।

लावा भुजै काल्क

लाव भूजय बैसली बहिन्यिा

चुलहा दहिनिया हे।

हे सुन्दरि मंगल आगि पजारल हे

सात्री पत्र मे राखल

लावा पुनि भूजल हे।

दुलहिन गृह मे बैसि जे ब्याहल हे।

कहय हे सखि सभ आनन्द मनाविय

प्रभु गोहराविय हे।

जुगे-जुगे बढ़ू अहिबात

कि अइहब गाबिय हे।

गोसाउन्कि गीत

अहाँ जगजननी सकल दुख मन्जनि हमरा

  बिसरि किये देल।

हमहूँ अबोध बोध नै हमरो किये उसह दुख देल।

कियेक चरण तब हटल अम्ब हे कियेक ऐहेन मन

हम अपराध कएल बड़ जननी मातु क्षमा कय देल

मूस कवि कर जोड़ि विनय करू हमरा बिसरि किय देल।

2

हे भवानी दुख हरू माँ पुत्र अपनो जानि कँ।

दय रहल छी दुख भारी बीच भँवर आन कँ।

आबि आशा मे पड़ल छी की करू हम कानि कँ

विश्वमाता छी अहाँ माँ आह! से हम मानि कँ।

कोटियो ने पएर छोड़ब हाथ राखब छानि कँ।

दीन प्रभु हम न्त्यि पूजब नेम व्रत कँ ठानि कँ।

  हे भवानी।

3

अम्बे-अम्बे जय जगदम्बे,

जय-जयकार करै छी हे।

तिनू भुवन के माय अहाँ छी

  तीन नयन से तकै छी हे।

सिंह पर एक कमल राजित,

ताहि पर बैसल छी हे।

भूत प्रेत सब झालि बजाबै

योगिन के नचबै छी हे।

राक्षस के संहार करै छी

दुनियाँ के जुड़बै छी हे।

4

कतेक दुख सुनाएब हे जननी

कतेक दुख.......

तंत्र-मंत्र एको नै जानल

की कहि अहाँ के सुनाएब हे जननी

मूर्ख पुत्र एक अहाँ के भुतिआएल

रखबनि संग लगाए, हे जननी

सूरदास अधम जग मूरख

तारा नाम तोहार, हे जननी

दुर्गा नाम तोहार।

5

मैया दुआर अड़हुल फुल गछिया

माँ हे फड़-फुल लुबधल डारि

दछिन पछिम स सूगा एक आएल

माँ हे बैस गेल अड़हुल फूल गाछ

फड़ो ने खाय सुगा फूलो ने खाय

माँ हे पाते पाते खेलय पतझार

कहाँ गेल किए भेल डीहवार ठाकुर

माँ हे अपन सूगा लीअ सुमझाय

भनहिं विद्यापति सुनू जगदम्बा हे

माँ हे सेवक पर रहबइ सहाय।

विषहरिक गीत

1

विषहरि सेब मोरा किछुओ ने भेल

बाँझिन पद मोरा रहिये गेल

कियो नीपय अगुआर, कियो पछुआर

हमहुँ अभागलि दुआर धेने ठार

कियो लोढ़ै बेली फूल किय्रो अढ़ूल

हमहुँ अभागलि तिरिया खोदू नामी दुबि

कियो मांगय अन-धन, कियो पूत

हमहुँ अभागलि कर जोड़ि ठार।

भनहिं विद्यापति विषहरि माय

सभ दिन सभ ठाम रहब सहाय।

2

साओन विषहरि लेल प्रवेश

भादव विषहरि खेलल झिलहोरि।

आसिन विषहरि भगता लेल पान

कतिक विषहरि नयना झरू नोर।

अगहन विषहरि हेती अनमोल।

3

ऊँच रे अटरिया पर विषहरि माय

राम, नीची रे अटरिया पर सोनरा के माय

देबौ रे सोनरा भाइ डाला भरि सोन

राम, गढ़ि विषहरि के कलस पचास

बाट रे बटोहिया कि तोहें मोर भाइ

राम, कहबनि विषहरि के कलसा लय जाइ

तोहरो विषहरि के चिन्हियो ने जानि

राम, कहबनि कोना के कलस लए जाय

हमरो विषहरि के नामी-नामी केश

राम, मुठी एक डाँर छनि अल्प बएस।

महेश्वाणी

1

दुर-दुर छीया ए छीया,

एहन बौराहा बर संग जयती कोना धीया

पाँच मुख बीच शोभनि तीन अंखिया

सह-सह नचै छनि सांप सखिया

दुर-दुर.....।

काँख तर झोरी शोभनि, धथूर के बीया

दिगम्बर के रूप देख साले मैना के हीया

दुर-दुर.....।

जँ धिया के विष देथिन पिआ

कोहबर मे मरती धीया

भनहि विद्यापति सुनू धीया के माय

बैसले ठाम गौरी के गुजरिया

दुर-दुर......।

2

ना जाएब, ना जाएब ना जाएब हे

सखि गौरी अंगनमा

गौरी अंगना सखि, पारवती अंगनमा

बहिरा साँपक माड़ब बनाओल

तेलिया देल बन्हनमा हे

धामन साँपक कोरो बनाओल,

अजगर के देल धरनमा हे

सखि गौरी अंगनमा

हरहरा के काड़ा-छाड़ा,

कड़ैत के लाओल कंगनमा

पन्यिादरार के पहुँची लाओल

ढरबा के लौल ढोलनमा हे,

सखि गौरी........

सुगवा साँप के लौल जशनमा हे,

चान्द तारा के शीशा लाओल

मछगिद्धि के अभरनमा हे,

सखि गौरी.........।

3

सखि जोगी एक ठाढ़ अंगनमामे

अंगनमामे, हे भवनमामे

साँपहि-साँप बामदहिन छल

चित्र-विचित्र वसनमामे

नित दिन भीख कतए सँ लायब

घुरि फिरि जाहु अंगनमामे

भीखो ने लिअए जोगी, घुरियो ने जाइ

गौरी हे निकलू अंगनमामे

भनहिं विद्यापति सुनू हे मनाइन

शिव सन दानी के भुवनमामे।

4

डर लगैए हे डेराओन लगैए

गौरी हम नहि जाएब तोरा अंगना, भयाओन लगैए

हे अजगर के सम्हा पर धामिन के बरेड़िया

गहुमन के कोरो फुफकार मारैए, गौरी हम....

कड़ेत के बत्ती पर सांखड़ के बन्हनमा

बिढ़नी के खोता घनघन करैए।

गौरी.........

सुगबा के पाढ़ि पर ढोरबा के ढोलनमा

पन्यिा के जीभ हनहन करैए

गौरी.........

तेहि घर मे बैसल छथि अपने महादेव

बिछुआ के कुण्डल सनसन करैए।

गौरी..........

5

हम नहि गौरी शिव सँ बिआहब

मोर गौरी रहत कुमारि हे

भूत-प्रेत बरियाति अनलनि

    मोर जिया गेल डेराइ गे।

गे माइ गालो चोकटल, मोछो पाकल

    पएरो मे फाटल बेमाइ गे

गौरी लए भागव, गौरी लए जाएब

    गौरी ले पड़ाएब नैहर हे।

भनहिं विद्यापति सुनू हे मनाइनि

    इहो थिक त्रिभुवननाथ हे

शुभ-शुभ कए गौरी के बिआह,

    तारू होउ सनाथ गे माइ।

नचारी

बम-बम भैरो हो भूपाल

अपनी नगरिया भोला खेबि लगाबऽ पार

कथी केर नाव-नवेरिया कथी करूआरि

कोने लाला खेबनहारे, कोने उतारे पार

सोने केर नाव-नवेरिया रूपे करूआरि

भैरो लाला खेबनहारे, भोला उतारे पार

जँ तोहें भैरो लाला खेबि लगाएब पार

मोतीचूर के लड्डुआ चढ़ाएब परसाद

हाथी चलै, घोड़ा चलै, पड़ै निशान

बाबा के कमरथुआ चलै, उठै घमसान

2

भोला नेने चलू हमरो अपन नगरी

अपन नगरी यो कैलास पुरी

पारबती के हम टल बजाएब

नित उठि नीर भरब गगरी

बेलक पतिया फूल चढ़ाएब

नित उठि भांग पीसब रगड़ी

भनहिं विद्यापति सुनू हे मनाइनि

इहो थिक दानीक माथक पगड़ी।

3

जय शिवशंकर भोले दानी

क्षमा मंगै छी तोरे सँ

अपराधी पातक हम भारी

तैं कनै छी भोरे से।

तोहर शरण छोड़ि ककरा शरण मे

जाएब हे शंकरदानी

दयावान दाता तोरा सन

के त्रिलोक मे नहि जानि।

जाधरि नहि ताकब बमभोले

हम चिचिआएब जोरे सँ

अपना ले फक्कर भंगिया

किन्तु तोहर अनुचर भरले

कोसे-कोसे नामी तूँ शंकर

सेवक पर सदिखन ढरले।

जन्म भेल माया तृष्णा मे

से तृष्णा नहि पूर भेलै।

कामना के लहरि मे बाबा

जीवन एहिना दूरि भेलै।

हे दुखमोचन पार लगाबऽ

हम दुखिया छी ओरे सँ

पूजन विधि नहि जानी हम हे

यएह जपि-जपि कऽ धियान धरी

कर्म चक्र के जीवन भरि हम

पेटे ले ओरियान करी

जे ज्योतिश्वर पार लगाबह

हम दुखिया छी ओरे सँ।

4

हटलो ने मानय त्रिपुरारी हो विपत्ति बड़ भारी

खूजल बसहा के डोरी कोना पकड़ब

चड़ि गेल फूल-फूलवारी, हो विपत्ति बड़ भारी

अंगने-अंगने सखि सभ उलहन दै छथि

कतेक सहब अति गारी, हो विपत्ति बड़ भारी

भनहिं विद्यापति सुनू हे गौरी दाइ

इहो छथि त्रिशुलधारी, हो विपत्ति बड़ भारी।

सोहर-

1

धन धन राज अयोध्या धन्य राजा दशरथ रे।

धन रे कौशल्या के भाग कि राम जनम लेल रे।

देखैत पण्डित पुरोहित पोथी कर नेने रे

ललना रे बालक होयत सगेआन वनहि सिधारत रे।

से सुनि रानी विकल भेल राजा मुरक्षित रे।

ललना रे राम जनम लेल जौं बन जायत रे।

मन गुनी रानी हरखित भेली राजा मुदित भेल रे।

ललना रे.......

भल भेल राम जनम लेल, बाँझी पद छुटल रे।

2

कौने मास मेघबा गरजि गेल

कोने मास बेंगवा बाजू रे

ललना रे कोने मासे होरिला जन्म लेल

कि गोतिनक हिया सालू रे।

सावन मेघवा गरजि गेल,

भादव बेंग बाजू रे।

आसिन होरिला जनम लेल

कि गोतिनक हिया सालू रे।

कोने तेल देव सासु के

कोने ननदि जी के रे।

ललना रे, करू तेल देबैन सासु जी के

गरी ननदि जी के रे।

ललना रे अमला दबैन गोतिन के

हुनकर पैंच हेतनि रे।

दसमासी सोहर

पहिल मास चढ़ु अगहन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

मूंगक दाल नहि सोहाय, केहन गरम संओ रे

ललना रे....

दोसर मास चढ़ु पूस, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पूसक माछी ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

तेसर मास चढ़ु माघ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पौरल खीर ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

ललना रे....

चारिम मास चढ़ु फागुन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

फगुआक पूआ ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाँचम मास चढ़ु चैत, देवकी गरम संओ रे

चैत के माछ ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

छठम मास चढ़ु वैशाक, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

आम के टिकोला ने सोहाय, कि केहन गरम सेओ रे

सातम मास चढ्ढु जेठ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

खुजल केश ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

आठम मास चढ्ढु अखाढ़, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाकल आम ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

नवम मास चढ्ढु साओन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

पिया के सेज ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

दसम मास चढ्ढु भाद्व, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

देवकी दरदे बेयाकुल दगरिन बजायब रे

जब जनमल जदुनन्दन, खुजि गेल बंधन रे

ललना रे.....

खुजि गेल बज्र केबार पहरू सभ सूतल रे।

++++++++++++++

यशोमति अद्भुत लेखल, बालक देखल रे

सुन्दर हुनकर गात, कि बात पकठोसल रे

कंस कैँ जी थर-थर काँपय, अपन घर पहुँचल रे

पूतनाकैँ देल विचार, जाहु तौहें गोकुल रे।

पूतना थन विष लेल घोरि विदा भेल गोकुल रे

घर स बहार भेली यशुमती, बालक लइली रे

देलनि पूतना कैँ कोर, बालक बड़ सुन्दर रे।

पूतना दूध पिआओल, आओर विष पसारल रे

हरि देलनि दरसन बैसाइ खसल मुरछाइ रे।

खेलौना

1

हाथक कंगना ननदी के दलनि

से नहि मन भाबय हो लाल।

फूल के घड़ी ननदिया माँगय,

सेहो कहाँ पाएब हो लाल।

डाँड़ के डरकस नन्दी के दलिएनि

से नहि मन भावय हो लल

पियबा देलियनि ननदोसिया देलिएनि,

से नहि मन भावय हो लाल।

ई सभ किछु नहि हुनका चाही

ओ मांगथि पठन्मे हो लाल।

2

सोठौरा नइ खाएब राजा तीत लगैए

सासु जे बजती बाजि कऽ की करती

छठियारी पुजाबऽ लए माय अबैए

सोठौरा ने खाएब......

गोतनो ने बजती बाजि कऽ की करती

हलुआ बनाबए लए भौजी अबैए।

सोठौरा ने......

नन्दो जे बजती बाजि कऽ की करती

कजरा सेदै लए बहिन अबैए।

सोठौरा ने……

देओर जे बजता बाजि कऽ की करता

दगरिन बजबै ले भाय अबैए।

सोठौरा ने……

मल्लाहक गोसाँइ, कमला गीत- 1

कमला-कमला सुनै छलौं कमला बड़ दूर हेऽऽ

गहबर पहसैत कमला भए गेल कसहूर हे,

अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे माइ बिनु लागै य सुनऽ हे।

कोयल-कोयला सनै छलौं कोयला बड़ी दूर हेऽऽ

गोबर पहसैते कोयला भऽ गेल मसहूर हे

अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे

जे भातिज बिनु लागै य सुन हे

कोयला-कोयला.....।

मातैर-मातैर सुनै छलौं मातैर बड़ी दूर हे

अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे स्वमी बिनु लागै य सुन हे

मातैर-मातैर.....।

ससिया-ससिया सुनै छलौं, ससिया बड़ी दूर हे

अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे बालक बिनु लागै य सुन हे

कमला-कमला......।

मल्लाहक गोसाँइ, कमला गीत- 2

कमला मैया बसत बड़ी दूर

गमक लागे गेंदा फूल

कथी डाली लोरहब बेली-चमेली

कथी डाली लोरहब अरहूल हे

गमक लागे गेंदा फूल कमला मैया.....

किनका चढ़ाएब बेली-चमेली

किनका चढ़ाएब अरहूल

गमक लागे गेंदा फूल-2

कमला चढ़ाएब बेली-चमेली

कोयला चढ़ाएब अरहूल,

गमक लागे गेंदा फूल हे

कमला...

किनका सँ मांगब अन-धन सोनमा

किनकासँ मांगब सोहाग गे सोहाग गे

मलहिन्याँ देखै मे फूल बड़ लाल हे

ससिया सँ मांगब अन-धन सोनमा

मातैर सँ मांगब सोहाग गे

मलहिन्याँ देखै मे फूल वर लाल....।

कमला..........।

गमक लागे गेंदा फूल....3

मल्लाहक गोसाँइ, कमला गीत- 3

कटबै मे सोना सुतरिया बिन्बै झुमरि जाल हेऽऽ

जाल फरि-फरि कमला एलखिन

सन-झुन लागै गोहबरिया

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हेऽऽ

कटबै.....

जाल फरि-फरि गांगो एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक,

सुन लगै गोहबरिया हे-2

कटबै........

जाल फरि-फरि मातैर एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै.....

बिन्बै झुमरि जाल हे।

मल्लाहक गोसाँइ, कमल गीत- 4

जग मग जग मग ज्योति जले मंदिरमे

देखियौ कमला के श्रृंगार कमला के

लट मे तेल सोभे हुनका सेंदुर के

अधिकार जग मग जले मंदिर मे

देखियौ मातैर के नाक मे नथिया सोभे

हुनका झुमका के अधिकार

जग मग जले मंदिर मे ससिया के मांग मे

टिका सोभे हुनका होसली के अधिकार

जग मग जग मग ज्योति जलै मंदिर मे

कमला श्रृंगार.....।

मल्लाहक ब्राह्मन गीत- 1

नटुआ खूब सुन्दर सँ गाना गाभिहँ नाचिहँ

ब्राह्मण के सुनभियँ पहिले

गबिहँ ब्राह्मण गीत तखने रामचंद्र

रधुविर नटुआ देतै असिरवाद

जुग जुग जीबह ब्राह्मण के सुनभिहँ...।

मल्लाहक ब्राह्मण गीत- 2

ब्राह्मण बाबू अंगना चनन घन गछिया

ओहीपर कोइली धनश्याम हे..

कटबै चनन गछिया बेढ़बै अंगनामा हे

छुटि जेतै कोइली घनश्याम हे..

कानए लगली खिजए लगली कोइली मुरूछिया

कथीसँ मेढ़ब तोहर दुनू पखिया हे..

कथी से मेढ़ब कोइली तोहर दुनू ठोर

सोने से मोरब हे कोइली

तोहर दुनू पखिया

रूपे से मेढ़ब तोहर दुनू ठोर हे..

जही वन जेबह हे कोइली रूनू झुनू बोलिया

रहि जेतऽ ब्राह्मण बाबू के नाम हे...।

मल्लाहक ब्राह्मण गीत- 3

गामक पछिमे एक ठूठि पखरिया

ओहिपर कोइली घनश्याम हे।

हरिनो ने मारे कोइली तितिरो ने मारे

बीछि-बीछि मारे लए मयूर हे

जब तोरा आहे कोइल सिन्दुर बकसबऽ

रहि जेतऽ ब्राह्मण बाबू नाम हे..।

डोमीनक गोसाँइ गीत-1

करिया कुखा हे काली माय लेलनि जोरि आइ हे

मैया एक कोस गेलऽ हे काली माय दुइ कोस गेलऽ हे

काली माइ तेसर कोस उठल शिकार हे

हकन कनै छै काली बैन के मयुर हे

बकैस दियौ सीर के सिन्दुर हे

सारी रात नटुआ नचाबऽ हे

होइत भोर मे उसारब हे......।

डोमीनक गोसाँइ गीत-2

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँ

हमरा पानि सेब देवता अरैध के लबिहेँ गै

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँ?

हमरा गौरध्या सन अरैध के लबिहेँ गै

एक मूडी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीन्यिाँ

हमरा गहील सन देवता अरैध के लबिहेँ गैऽऽ.....।

डोमीनक गोसाँइ गीत-2

इहो हम जनतियौ गहिल मैया

औथिन आंगन चनन घर ढौरितियौ हे

कथिये दियरा कथिये के बाती

सेरसों तेल जराबितौं सारी रात हे

सोने के दियरा पताबर सुत बाती

सेरसौं के तेल जराइबतौं हे

जसो दियौ जसो दियौ गोसाओं

अही जस वीरहब संसार हे..।

डोमीनक ब्राह्मण गीत

ब्राह्मण के अंगना मे चन्नन बृक्षिया

ओइ तरो कोयली धन श्याम हेऽऽ

काटबै चनन गाछ बेरबै अंगनमा

रहि जेतै ब्राह्मण के इनाम हे

कथिये मेराहयब कोयली तोहर दुनू पैखिया

कथिये मेराहयब तोहर दुनू ठेर हेऽऽ

सोने से मेराहयब कोइली तोहर दुनू पैखिया

रूपे मेराहयब दुनू ठेर हे....।

मुसहरक गोसाँइ गीत-

किनका कोखी बस्तीपर आएल गांगे जनमलि हे

कहाँ माँ लिऔ बसेरा सखी-2

आजू गांगों गोहबर आएल हाथ कमल के फूल सखी-2

किनका....

मैया कोखी गांगो जनमलि हे,

गोहबर लियो बसेरा सखी

आजू गांगो गोहबरमे आएल हाथ दिऔ तलवार

सखी.....2

किनका कोखी बस्तीपर आएल गोगे जनमलि हे....2

मुसहरक ब्राह्मण गीत-1

ब्राह्मण बाबू अंगना चनन घन गछिया

ओही तर कोयली घनश्याम हे-2

काटबै चंदन गाछ, बेरब अंगनमा

छुटि जेतै कोयली घनश्याम हे-2

कानऽ खिजऽ लगलै कोयली बिरिछिया

झरऽ लगलै नयना से नोर हे-2

ब्राह्मण........।

जानु-कानु जानु खोजै, कोयली मुरूत्तिया

झरऽ लगलै नयना से नोर हे-2

तोहरो जे देबौ हे कोयली

सोने दुनू पखिया रूपे से मोहबै ठोर हे-2

ब्राह्मण.......।

जहू वन जेबऽ हे कोयली रूनु-मुनू बोलितर

रहि जेतऽ ब्राह्मण बाबू के नाम हे-2

ब्राह्मण.......।

मुसहरक ब्राह्मण गीत-2

कथी बिनु यौ अहाँ ब्राह्मण कथी बिनु सकलक हिंग मैयो-2

शिव ब्राह्मण अयलह गोहबरमे

किरतन्यिाँ नाच देखाओ सखी-2

कथी बिनु..........।

दूध बिनु सेवक मुँह मलिन लड्डू बिनु सकलक हिंग भेल-2

शिव ब्राह्मण.........।

कथी ब्राह्मण के मुँह मलिन, कथी बिनु सकलक हिंग मयो

भजू ब्राह्मण आहै गोहबर मे, किरतन्यिाँ नाच देखाओ सखी-2

जनऊ बिनु सेवक मुँह मलिन, पान बिनु सकलक मुँह हिंग मयो-2

भजू.........।

मुसहरमे छेका गीत-

झिलिया के लोभे जे गोसाओन, अयलौं अंगनमा हे

मइया मधुर देखि रहलौ लोभाय-2

पहिले जे अइवतौं जे गोसाओं सब मधुर खइतौं

हे मइया सब मुधर गेल बिकायी हे-2

झिलिया के..........।

झिलिया के लोभे जे गोसाओन, अयलौं अंगनमा

यौ बाबा, मधुर देखि रहलौं लोभाय हे-2

पहिल जे अइवतौं, सब मधुर खइतौं यौ बाबा

सब मधुर गेल बिकायी हे झिलिया....।

मुसहरमे कुमार-बियाह गीत-

मन छैल मनोरथ सुति घर बियाही तहुँ करितौं पंडित जमइया हे

सेहो देबौ नै जाने करितौं नै पंड्ति जमाय हे-2

मन छैल

लवका जे पतवा कहुँवा ने पायल पुरना पतवा जे भेल

अनमोल, छोटे-छोटे खिलिया लगहबियौ बाबा

बहुते डड़ाबैए बरियात हे-2

येहो हम जैनतौं गयि पोती खपि लैतौं दसे गाछै मरिचिया

मरिचयक जोग गै हम पोती, ओही तम फूल से उघारऽ हे...2

मन छैल मनोरथ.....।

मुसहरक बियाह गीत-

छोटी-मोटी तुलसी के गछिया

ओही मे जे चतरल डरहिया हे-2

ओही तरऽ कमला लेलनि विसराम

हे सोहागन तुलसी-2

केयो चढ़ाबै हुनका फूल अक्षत हे

केयो चढ़ाबै लड्डू पान हे सोहागन तुलसी-2

भगता चढ़ाबै जुनका फूल अक्षत

सेवक चढ़ाबै नऽ पान

हे सोहागन तुलसी-2

छोटी-मोटी तुलसी...........।

चमार जातिक गोसाँइ गीत-1

साँझ दियौ साँझ दियौ बाभन के बेटिया यै साँझ बीतल जैयऽऽ

कथी के दियरा राकी कथी सुत बाती यै साँझ बीतल यैयऽऽ

सोने के दियरा राकी पाटेसुत बाती यै साँझ बीतल जैयऽऽ

जरै लागल दियरा राकी जमाके लागल बाती यै साँझ बीतल जैयऽऽ

खेले लागल पचदेवती सारी रात यै साँझ बीतल जैयऽऽऽ।

चमार जातिक गोसाँइ गीत-2

कारूवीर के अंगना मे अरहुल फूल गछिया हेऽऽ

फरल फुलाल डारि लुबधल हेऽऽ

उत्तरे ही राजासँ ये सुगा एक आयल बैसल सुगा

अरहुल फूल गाछ हेऽऽ

फल ने खाइ छैंय रे सुगबा फूलो ने खाइ छैंय

डारीपाती केला सकचूर हेऽऽ

उत्तरे ही राजा सँ ये एलैँ सरनरिया बैसल सुगा दिऔ

ने बझाईऽऽ

सुबगवों नै छियै हौ सेवक पंछी नै छिय़ै

इहो छिय़ै सेवक के खेलौना हेऽऽ।

चमार जातिक मूडन गीत-

कौने बाबा कैची गरहाओल सोना से मेरहाओल हेऽऽ

ललना रे अपन दादी लेलक जन्म केश होरिलाजी के मूड़न हेऽऽ

अपन छुड़िया गरहाओल सोना से मेरहाओल हेऽऽ

ललना रे अपन मामा-मामी लेतनि जनम केश हो सिलाजी के मूडन हेऽऽ

अपन चाचा कैची गरहाओल सोना से मेरहाओल हेऽऽ

ललना रे अपन चाची लेतनि जन्म केश होरिलाजी के मूड़न हेऽऽ

अपन नाना कैची गरहाओल सोना से मेरहाओल हे

ललना रे अपन नानी लेतनि जन्म केश होरिलाजी के मूड़न हेऽऽ।

चमार जातिक बियाह गीत-1

हरी हरी वाँस कटाइ दऽ हो बाबा ऊँचे-ऊँचे मरबा

छराइ दऽ हौ बाबा मरबा बती होने ठार भेलै

सोनी बेटी कइ लॉब एला वरियात हे

गइया जे देलियै हौ बाबा भैसियो देलियै साइकिल रूसल जमाइ हे

छुब व्यिौ पोती भिन्सरबा लागा दियौ बजार हेऽऽ

खरीद लेबै साइकिल बोधि लेबै जमाइ हे

हरि हरि वाँस कटाइ दहो बाबा मरबा के बती घेने ठार

सोनी बेटी कइ लाख एला वरियात हेऽऽ

औठी जे देलियै हौ पापा घड़ी जे देलियै

मोवाइल ले रूसल जमाइ हे

छुब व्यिौ भिनसरबा बेटी लागा दियौ बजार हे

खरीद लेबै मोवाइल बोधि लेबै जमाइ हे...।

चमार जातिक बियाह गीत-2

चलु चलु हे सखी सभ अजोध्या नगरी-2

अजोध्यामे जाय के भरब गगरी-2

अजोध्या के छौड़ा सभ बर रगड़ी

मारत तीर मैय गे फोरत गगरी

हुनका राजा दशरथ सँ किनायब गगरी

हुनका रानी कोशीला से भराएब गगरी।

चमार जातिक बियाह गीत-3

गेंद खेल गेला दुलरूवा मालिन फूलवरिया

तोरि देलक अरहुल फूल गाछ हेऽऽ

मछिया बैसल छथिन बाबा

से अपन बाबा मलिन देलक उपराग हे

एहेन ज्ञान पहिले जे बस्तहिहँ भोरे उठि देला उपराग हेऽऽ

लड़की जे रहितै गै मालिन वरजल जाइतै

छहेलबा बरजलो ने जाइ हो।

गेंद खेलऽ गेला दुलरबा मालिन फूल वरिया

तोरी देला सुपारी के गाछ हेऽऽ

मछिया बैसल छथिन पापा से अपन पापा

भोरे उठी देलक उपराग हे

लड़की जे रहितै वरजल जाइतै छहेलबा बरजलो ने जाइ हे...।